# वेदमन्त्राः

#### Colophon

This document was typeset using  $X_{\underline{1}}M_{\underline{1}}X$ , and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several  $M_{\underline{1}}X$  macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

#### Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and https://sa.wikisource.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma.

See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

| अनुक्रमणिका    | i  |
|----------------|----|
| अनुऋमणिका      |    |
| रुद्रप्रश्नः   | 1  |
| चमकप्रश्नः     | 11 |
| पुरुषसूक्तम्   | 17 |
| नारायणसूक्तम्  | 20 |
| विष्णुसूक्तम्  | 22 |
| भूसूक्तम्      | 23 |
| दुर्गा सूक्तम् | 25 |
| श्रीसूक्तम्    | 27 |
| मेधासूक्तम्    | 30 |
| भाग्यसूक्तम्   | 31 |
| पवमानसूक्तम्   | 33 |
|                |    |

| अनुक्रमाणका  |    |
|--|----|
| आयुष्यसूक्तम्  | 37 |
| नवग्रहसूक्तम्  | 39 |
| नक्षत्रसूक्तम्   | 43 |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्                                 | 52 |
| मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः                                 | 57 |
| महान्यासः  | 61 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 61 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्    | 63 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः                          | 66 |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः      | 73 |
| पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः               | 74 |
| हंसगायत्री   | 75 |
| दिक् सम्पुटन्यासः                                      | 76 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्                                    | 81 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः             | 87 |
| आत्मरक्षा  | 88 |
|  |    |

| अनुक्रमणिका                  | iii |
|------------------------------|-----|
| शिवसङ्कल्पः                  | 89  |
| पुरुषसूक्तम्                 | 95  |
| उत्तरनारायणम्                | 97  |
| अप्रतिरथम्                   | 98  |
| प्रतिपूरुषम् (सं०)           | 100 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)         | 101 |
| शतरुद्रीयम् (सं॰)            | 103 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा०)          | 105 |
| पञ्चाङ्गम्                   | 107 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः           | 108 |
| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्  | 109 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम्     | 110 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 113 |
| षोडशोपचार पूजा               | 114 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती         | 114 |
| प्रदक्षिणम्                  | 123 |
| नमस्काराः                    | 124 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना        | 127 |
| प्रार्थना                    | 132 |
|                              |     |

| अनुऋमणिका      |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   | iv  |
|----------------|---|--|---|---|---|---|---|---|--|---|--|---|---|---|---|-----|
| श्रीरुद्रजपः   | • |  | • |   | • |   |   |   |  |   |  |   |   | • | • | 133 |
| ध्यानम् .      |   |  | • | • | • | • | • |   |  | • |  | • | • | • | • | 134 |
| रुद्रप्रश्नः . |   |  |   |   | • | • |   |   |  |   |  |   |   |   |   | 136 |
| चमकप्रश्नः     | • |  |   |   |   |   | • | • |  | • |  |   |   |   |   | 145 |
| रुद्रपद्पाठः   |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   | 154 |
| मन्त्रपुष्पम्  |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   | 168 |
| दशशान्तयः      |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   | 171 |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |
|                |   |  |   |   |   |   |   |   |  |   |  |   |   |   |   |     |

### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनामुंपमश्री-वस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नर्मस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाह्भ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वचंसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ अध्यंवोचदिधवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्व सर्वां अम्भयन्त्सर्वांश्व यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभुः सुंमङ्गलंः। ये चेमा रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा हेर्ड

ईमहे॥ असौ योंऽवसपंति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशन्नदंशनुदहार्यः॥ उतैनं विश्वां भूतानि स दष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीदुषे॥ अथो ये अंस्य सत्वानोऽहं तेभ्योंऽकरं नर्मः। प्र मुंश्र धन्वनुस्त्वमुभयोरार्त्रियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशंल्यो बाणवा उत॥ अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषङ्गर्थिः। या तें हेतिमींदुष्टम हस्तें बभूवं ते धर्नुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिन्धुज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें॥ उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिरूस्मान्वृंणक्त विश्वतंः॥ अथो य इंषुधिस्तव्ऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥ नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तुकार्य त्रिकालाग्निकालार्य कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पत्ये नमो नमः सुस्पिञ्जराय त्विषींमते पथीनां पत्रये नमो नमों बसुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पत्रये नमो नमो हरिंकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमों भवस्यं हेत्यै जगंतां पतंये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पतिये नमो नमेः सूतायाहेन्त्याय वनानां पतिये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमों मित्रणें वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमों भुवन्तयें वारिवस्कृतायौषंधीनां पतंये नमो नमं उच्चेर्घोषायाऋन्दयंते पत्तीनां पत्ये नमो नमंः कृत्स्रवीताय धावंते सत्वंनां पत्ये नमंः॥२॥

नमः सहंमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतंये नमो नमेः ककुभायं निष्क्रिणें स्तेनानां पत्ये नमो नमो निष्क्रिणं इष्धिमते तस्कराणां पत्ये नमो नमो वश्चते परिवर्श्वते स्तायूनां पत्ये नमो नमों निचेरवे परिचरायारंण्यानां पत्ये नमो नमेः सृकाविभ्यो जिघारं सद्यो मृष्णतां पत्ये नमो नमोऽसिमद्यो नक्तं चरंद्यः प्रकुन्तानां पत्ये नमो नमे उष्णीिषणे गिरिचरायं कुलुआनां पतंये नमो नम् इष्मद्रो धन्वाविभ्यंश्च वो नमो नमं आतन्वानेभ्यः प्रतिद्धानेभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छंद्र्यो विसृजद्र्यंश्च वो नमो नमोऽस्यंद्र्यो विध्यंद्र्यश्च वो नमो नम् आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्यो जाग्रंद्र्यश्च वो नमो नम्स्तिष्ठंद्र्यो धावंद्र्यश्च वो नमो नमः स्भाभ्यः स्भापितिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वभ्योऽश्वंपतिभ्यश्च वो नमः॥३॥

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ ह्तीभ्यंश्च वो नमो नमों गृत्सेभ्यों गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेंभ्यो व्रातंपतिभ्यश्च वो नमो नमों गणेभ्यों गणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुलकेभ्यश्च वो नमो नमों रथिभ्योंऽरथेभ्यंश्च वो नमो नमो रथेँभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाँभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमंः, क्षत्तृभ्यंः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृन्धों धन्वकृद्धंश्च वो नमो नमों मृगयुभ्यंः श्वनिभ्यंश्च वो नमो

नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नर्मः॥४॥

नमों भवायं च रुद्रायं च नमः शर्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कपर्दिनं च व्युप्तकेशाय च नर्मः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नर्मो गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मी्दुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृहते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वेने च नमो अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नर्मः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥ नमों ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमों मध्यमायं चापगुल्भायं च नमों जघुन्यांय च बुध्नियाय च नर्मः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमों वर्मिणें च वरूथिनें च नमों बिल्मिनें च कवचिनें च नर्मः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चाऽऽहन्न्यांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निष्क्षिणें चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चाऽऽयुधिनें च नमेः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः सुत्यांय च पथ्यांय च नमेः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वैशन्तायं च नमः कूप्यांय चावट्यांय च नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमें ईिंध्रयांय चाऽऽतप्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चाऽऽलाद्यांय च नमः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च॥८॥

नमं इिष्णांय च प्रपृथ्यांय च नमंः कि शिलायं च क्षयंणाय च नमंः कपिदिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठांय च गृह्यांय च नम्स्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमंः काट्यांय च गह्ररेष्ठायं च नमों हृद्य्यांय च निवेष्यांय च नमंः पाश्सव्यांय च रजस्यांय च नमः शुष्क्यांय च हिर्त्यांय च नमो लोप्यांय चोलप्यांय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमं प्राण्यांय च पर्णशृद्यांय च नमो ऽपगुरमाणाय चाभिघृते च नमं आख्खिदते च प्रख्खिदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाश हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दिरंद्रन्नीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तुनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा॰ रुद्रायं तुवसें कपूर्दिनें क्षयद्वीराय् प्रमेरामहे मृतिम्॥ यथां नुः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायुजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्मधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तुसद् युवानं मृगं न भीममुपहत्रुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तर्वानो अन्यं ते अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्वं मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यम्स्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयंः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा ई सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् मंहत्यंर्ण्वै-उन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्५ रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासं कपर्दिनं ॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा युव्युधंः॥ ये तीर्थानिं प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निषङ्गिणंः॥ य एतावंन्तश्च भूयार्रसश्च दिशो रुद्रा विंतस्थिरे॥ तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि॥११॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनानमृत्योर्मृक्षीय माऽमृतांत्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओष्धीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमों अस्तु॥ तमुंष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं में विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंस्मा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे कतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्लुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वार्कं मे मनश्च मे चश्चंश्च मे श्लोकं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे त्नूश्चं मे शर्मं च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानिं च मे परूरंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामंश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा च मे मिह्मा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे वृष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं च मे श्रुद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोदंश्च मे जातं च मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वि्त्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच मे सुगं च मे सुपर्थं च म ऋद्धं च म ऋद्धिंश्च मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्च में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में सुविच्चं में ज्ञात्रं च में सूर्श्चं में प्रसूर्श्च में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्च में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनंं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्वं मे रायश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽन्नं च मेऽक्षुंच मे व्रीहयंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

अश्मां च मे मृत्तिंका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकंताश्च मे वनस्पतंपश्च मे हिरंण्यं च मेऽयंश्च मे सीसं च मे त्रपुंश्च मे श्यामं च मे लोहं च मेऽग्निश्च म आपश्च मे वीरुर्धश्च म ओर्षधयश्च मे कृष्टपच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्याश्चे मे पशर्व आरण्यार्श्व यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वस् च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥ अग्निश्चं म इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म इन्द्रंश्च मे सविता चं म इन्द्रंश्च में सरंस्वती च म इन्द्रंश्च मे पूषा चं मु इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रेश्च मे मित्रश्चं म इन्द्रेश्च मे वरुणश्च म इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म इन्द्रंश्च मे धाता चं म इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म इन्द्रंश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च मे दौश्चं म इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म इन्द्रंश्च मे मूर्धा चं मु इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च मु इन्द्रंश्च मे॥६॥ अ॰शुश्चं मे रश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपा॰शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानंश्च मे शुक्रश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्रीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बर्हिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे सुचेश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायुव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पच्ताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाका्रश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदिंतिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्कंरीरङ्गलयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपश्च म ऋतुश्चं मे ब्रुतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृत्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्व मे पश्चावी चं मे त्रिवृत्सर्श्वं मे

त्रिवृत्सा चं मे तुर्युवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टुवाचं मे पष्टोही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वृहचं मेऽनुङ्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुर्युज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पता् श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च में त्रयोंदश च मे पश्चंदश च में सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि शतिश्च मे त्रयों वि शतिश्च मे पश्चेवि शतिश्च मे सप्तवि श्रेशतिश्च मे नवंवि शतिश्च एकंत्रि॰शच मे त्रयंस्नि॰शच मे चतंस्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंर्विश्शतिश्च मेऽष्टावि ५ शतिश्व मे द्वात्रि ५ शच मे षद्भि ५ शच चत्वारि १ शर्च मे चतुंश्चत्वारि १ शर्च मेऽष्टाचंत्वारि १ शर्च मे वाजंश्र प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्या च् व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥ इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृहस्पतिंरुक्थामुदानिं शश्सिषुद्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जिनष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष पुवेद सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावांनस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौं ऽस्येहा ऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कां ऋामत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथों पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषाँ। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अंस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन् परिधर्यः। त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्रम् पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्संर्वृहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पुशू इस्ता इश्चें के वायुव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ घुज्ञात्सं वृंहुतंः। ऋचः सामांनि जज्ञिरे। छन्दा १सि जिजरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चीभयादेतः। गावीं ह जिज्ञरे तस्मौत्। तस्मौजाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पादांबुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजुन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यंः। पुद्धाः शूद्रो अजायत॥ चुन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्वाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिंक्षम्। शीर्ष्णो द्योः समेवर्तत। पद्भां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथां लोका ५ अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंण् तमंसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणिं विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्हारं। शुक्रः प्रविद्वान् प्रदिशृश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानुमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अद्भः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकर्मणः समेवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विद्धंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।

आदित्यवंणुं तमंसः परंस्तात्। तमेवं विद्वानुमृतं इह भंवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयंनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानित योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आर्तपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदं बुवन्। यस्त्वैवं ब्राँह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशैं॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुवम्। विश्वं नारायंणं देवमक्षरं परमं पदम्। विश्वतः पर्रमान्नित्यं विश्वं पतिं विश्वंस्यऽऽत्मेश्वंर शाश्वंत शिवमंच्युतम्। नारायणं मंहाज्ञेयं विश्वात्मांनं परायंणम्। नारायणपंरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तुत्त्वं नारायुणः परः। नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः। यर्च किञ्चिज्जंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपिं वा॥ अन्तंबीहिश्चं तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्तमव्ययं कवि संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पद्मकोश प्रंतीकाश ४ हृदयं चाप्यधोमुंखम्। अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुंपरि तिष्ठति। ज्वालमालाकुलं भाती विश्वस्यऽऽयतनं महत्। सन्तंत १ शिलाभिंस्तुलम्बंत्याकोश्यन्निंभम्। तस्यान्तें सुषिर सूक्ष्मं तस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानं-ग्निर्विश्वाचिर्विश्वतोमुखः। सोऽग्रंभुग्विभंजन्तिष्ठन्नाहारमजुरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयंस्तस्य सन्तंता।

सन्तापयंति स्वं देहमापांदतलमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्नंशिखा अणीयोध्वां व्यवस्थितः। नीलतोयदं-मध्यस्थाद्विद्युष्ठंखेव भास्वरा। नीवारशूकंवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपंमा। तस्याः शिखाया मध्ये पुरमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हिरः सेन्द्रः सोऽक्षरः पर्मः स्वराद्॥ ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय व नमो नमः। नारायणायं विद्महं वासुदेवायं धीमहि। तन्नो विष्णः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवीचं यः पार्थिवानि विम्मे रजा रेस् यो अस्केभायदुत्तर स्थर्स्थं विचक्रमाणस्रोधोर्रुगायो विष्णोर्राटमिस् विष्णोः पृष्ठमिस् विष्णोः श्रभ्रेंस्थो विष्णोः स्यूरिस् विष्णोर्धुवमिस् वैष्णवमिस् विष्णवे त्वा॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

# ॥विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा रसि यो अस्कंभायदुत्तंर सधस्थं विचक्रमाणस्रोधोरुंगायः॥ तदंस्य प्रियमभिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णोः पदे पंरमे मध्व उत्थ्संः। प्र तद्विष्णुंः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वां। परो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्वमन्वंश्रुवन्ति॥ उमे ते विद्म रजंसी पृथिव्या विष्णों देवत्वम्। परमस्यं विथ्से। विचंक्रमे पृथिवीमेष एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुषे दश्स्यन्। ध्रुवासों अस्य की्रयो जनांसः। उरुक्षिति । सुजनिमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचंक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्। त्वेष इह्यंस्य स्थविंरस्य नामं॥

**॥ भूसूक्तम्॥** (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – १/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः – ३)

भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा। उपस्थें ते देव्यदितेऽग्निमंत्रादमुत्राद्यायाऽऽदंधे। आऽयङ्गौः पृश्लिरक्रमी-दसनन्मातरं पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। त्रि शब्दाम वि रांजित वाक्पंतङ्गायं शिश्रिये। प्रत्यंस्य वह द्युभिंः। अस्य प्राणादंपानृत्यंन्तश्चंरति रोचना। व्यंख्यन् महिषः सुवंः॥ यत्त्वा त्रुद्धः पंरोवपं मृन्युना यदवंर्त्या। सुकल्पंमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामसि। यत्ते मन्युपंरोप्तस्य पृथिवीमनुं दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसंवश्च समाभंरन्। मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञ समिमं देधातु। बृहस्पतिंस्तनुतामिमं नो विश्वें देवा इह मांदयन्ताम्। सप्त तें अग्ने समिधंः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृंणस्वा घृतेनं। पुनेरूजी नि वेर्तस्व पुनेरग्न इषाऽऽयुंषा। पुनेर्नः पाहि विश्वतंः। सह रय्या नि वर्तस्वाऽग्ने पिन्वंस्व धारया। विश्विपस्रिया विश्वतस्परि। लेकः सलेकः सुलेकस्ते ने आदित्या आज्यें जुषाणा वियन्तु केतः सकेतः

सुकेत्स्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवस्वा १ अदितिर्देवंजूतिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु।

# ॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – २)

जातवेदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदंः। स नंः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः॥१॥ तामग्निवंणां तपंसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कंर्मफुलेषु जुष्टांम्। दुर्गां देवी १ शरणमृहं प्रपद्ये सुतर्रसि तरसे नमः॥२॥ अग्ने त्वं पारया नव्यों अस्मान्थ्स्वस्तिभिरतिं दुर्गाणि विश्वां। पूर्श्व पृथ्वी बंहुला नं उर्वी भवां तोकाय तनयाय शं योः॥३॥ विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न नावा दुंरिताऽतिंपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौंऽस्माकं बोध्यविता तुनूनांम्॥४॥ पृतना जित्र सहंमानमुग्रमग्नि ह्वेम पर्माथ्सधस्थांत्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामंद्देवो अति दुरितात्यग्निः॥५॥ प्रत्नोषिं कमीड्यों अध्वरेषुं सनाच होता नव्यंश्च सित्सं। स्वाश्रीग्ने तनुवं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व॥६॥ गोभिर्जुष्टंमयुजो निषिंक्तं तवेंन्द्र विष्णोरनुसश्चरेम। नाकंस्य पृष्ठमि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

कात्यायनायं विदाहं कन्यकुमारि धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयाँत्॥

# ॥श्रीसूक्तम्॥

हिरंण्यवर्णां हिरंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१॥
तां म् आवंह् जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्।
यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥
अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां हिस्तनांदप्रबोधिनीम्।
श्रियंं देवीमुपंह्वये श्रीमांदेवीर्जुषताम्॥३॥
कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामाद्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवंणां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥

कां सोऽस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवंणां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरंणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृंणे॥५॥ आदित्यवंणें तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलांनि तपसा नुंदन्तु मायान्तरायाश्चं बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥ क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूति-मसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

गुन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥९॥

मनेसः काम्माकूतिं वाचः स्त्यमंशीमितः। पृशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृथि सम्भव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियंं वासयं मे कुले॥१२॥

आर्द्रां पुष्किरिणीं पुष्टिं सुवुर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जात्वेदो म् आवेह॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यृष्टिं पिङ्गुलां पेद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवंह॥१४॥

तां म् आवेह् जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुषानुहम्॥१५॥ मृहादेव्यै चं विद्महें विष्णुपृत्यै चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयाँत्॥१६॥

# ॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१-४४)

मेधादेवी जुषमांणा न आगांद्विश्वाची भद्रा सुंमनस्यमांना। त्वया जुष्टां नुदमाना दुरुक्तांन् बृहद्वंदेम विदर्थे सुवीराः। त्वया जुष्टं ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगतश्रींरुत त्वयां। त्वया जुष्टश्चित्रं विंन्दते वसु सानों जुषस्व द्रविंणो न मेधे॥ मेधां म इन्द्रों ददातु मेधां देवी सरस्वती। मेधां में अश्विनांवुभावार्धत्तां पुष्कंरस्रजा। अप्सरासुं च या मेधा गंन्थर्वेषुं च यन्मनंः। दैवीं मेधा सरंस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषता् इं स्वाहां॥ आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वंमाना सा मां मेधा सुप्रतींका जुषन्ताम्। मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु।

|| भाग्यसूक्तम् || (तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – ८/अनुवाकम् – ९)

प्रातर्ग्निं प्रातरिन्द्र र हवामहे प्रातर्मित्रा वर्रुणा प्रातर्श्विनां। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमंमुत रुद्र हुवेम॥१ प्रातुर्जितं भगंमुग्र हुवेम वयं पुत्रमदितेयीं विधुर्ता। आर्द्धश्चिद्यं मन्यंमानस्तुरश्चिद्राजां चिद्यं भगं भक्षीत्याहं॥२॥ भग प्रणेतर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुदंवृददंनः। भगप्रणों जनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिनृवन्तः स्याम॥३॥ उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना ५ सुमृतौ स्याम॥४॥ भगं एव भगवा । अस्तु देवास्तेनं वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वां भग सर्व इञ्जोहवीमि स नो भग पुर एता भेवेह॥५॥ समध्वरायोषसोऽनमन्त दधिक्रावेव शुचंये पदायं। अर्वाचीनं वंस्विदं भगं नो रथंमिवाश्वांवाजिन आवंहन्तु॥६॥ अश्वांवतीर्गोमंतीर्न उषासों वीरवंतीः सदंमुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुहांना विश्वतः प्रपीना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५ यो माँ ऽग्ने भागिन १ सन्तमथां भागं चिकींर्षति। अभागमंग्ने तं कुंरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

#### ॥ पवमानसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – १/प्रश्नः – ४/अनुवाकः – ८) (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ५/प्रपाठकः – ६/अनुवाकः – १)

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। दिधिकाव्णों अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनंः। सुर्भिनो मुखांकरत्। प्रण् आयूर्ंषि तारिषत्।

आपो हि ष्ठा मंयो भुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतमो रसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उश्तीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कृश्यपो यास्विन्द्रेः। अग्निं या गर्भं दिधिरे विरूपास्ता न आपः शङ् स्योना भंवन्तु॥ यासा राजा वर्रुणो याति मध्ये सत्यानृते अंवपश्यं जनानाम्। मधुश्चतः शुचंयो याः पांवकास्ता न आपः शङ् स्योना भंवन्तु॥ यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भृक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्त्॥

शिवनं मा चक्षंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचं मे। सर्वारं अग्नीर रंप्सुषदों हुवे वो मिय वर्चो बलमोजो नि धंत्त॥

पर्वमानः सुवर्जनः। पवित्रेण विचेर्षणिः। यः पोता स पुंनातु मा। पुनन्तुं मा देवजुनाः। पुनन्तु मनंवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयवंः। जातंवेदः पुवित्रंवत्। पुवित्रंण पुनाहि मा। शुक्रेणं देवदीद्यंत्। अग्ने क्रत्वा क्रतू रनुं। यत्तं पवित्रमिचिषिं। अग्ने वितंतमन्तरा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रेण सवेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। -वैश्वदेवी प्नती देव्यागात्। यस्यै बह्वीस्तनुवी वीतपृष्ठाः। तया मदंन्तः सधमाद्येषु। वयः स्यांम पतंयो रयीणाम्। वैश्वानरो रश्मिर्भिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मंयो भूः। द्यावांपृथिवी पर्यंसा पर्योभिः। ऋतावंरी यज्ञियं मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्षिष्ठैर्देवमन्मंभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपुनत। येनाऽऽपों दिव्यं कर्शः। तेनं दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पांवमानीरध्येतिं। ऋषिभिः सम्भृत् रसम्। सर्व स पूतमंश्राति। स्वृद्तितं मांतरिश्वंना। पावमानीयों अध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृतर रसम्। तस्मै सरंस्वती दुहे। क्षीर स्पिर्मधूंदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पयंस्वतीः। ऋषिभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत र हितम्। पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथों अमुम्। कामान्त्समंधयन्तु नः। देवीर्देवैः स्मार्भृताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुद्घाहि घृतश्चर्तः। ऋषिंभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत्रं हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदा। तेनं सहस्रंधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं पवित्रम्। शतोद्यांम १ हिरण्मयम्। तेनं ब्रह्म विदो वयम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सह मां पुनातु। सोमंः स्वस्त्या वरुंणः समीच्यां। यमो राजाँ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयंन्त्या पुनातु। भूर्भुवः सुर्वः।

तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उंज्ञहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाः पिनाकी। ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविषां घृतेन॥१॥

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्याद्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात्। स मृत्युपाशानपनुंद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्त देवः॥२॥ ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषु गुर्भं यमाद्धात् पुरुरूपं जयन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकम्च्यं तमायुषे वर्धयामो घृतेन॥३॥ श्रियं लक्ष्मीमौबलामंम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनि सरूपामिहायुषे तर्पयामो घृतेन॥४॥

दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपां विरूपाः। ससूनवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतिमिदं जुष्नताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाँः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमश्नंन्तु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधां घृतेन मा नः प्रजा॰ रीरिषो मौत वीरान्॥६॥

एकः पुर्स्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनंस्य गोपाः।

यमप्येति भुवनः साँम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषेँत्तु देवः॥७॥

वसून् रुद्रांनादित्यान् मरुतोंऽथ साध्यान् ऋंभून् यक्षान् गन्धर्वाङ्श्च पितृङ्श्च विश्वान्। भृगून् सर्पाङ्श्चाङ्गिरसोंऽथ सर्वान् घृत्र् हुत्वा स्वायुष्या महयांम शृश्वत्॥८॥

विष्णो त्वं नो अन्तंमः शर्मं यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्रुत उथ्सं दहते अक्षितम्॥९॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



आयुंष्टे विश्वतों दधद्यम्भिर्वरेंण्यः। पुनेस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्मर् सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने ह्विषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गर्व्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

#### ॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदाँम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा १ रेता १ सि जिन्वति। स्योना पृंथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वय हिते नेव जयामिस। गामर्थं पोषयिल्वा स नों मृडाती हशें॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥ प्रवंः शुक्रायं भानवं भरध्व हव्यं मितं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुषा जन्र्ष्यन्तर्विश्वांनि विद्या ना जिगांति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमंश्रवम्। न ह्यंस्या अपुरश्चन जरसा मरंते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेंभ्यः।

अस्माकंमस्तु केवंलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षुत्येकपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिंजागृह्येनिमष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं चं। पुनंः कृण्व॰ स्त्वां पितरं युवांनम्नवाता॰ सीत्विय तन्तुमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णों पृष्ठमंसि विष्णोः श्रत्रेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों पृंवमंसि विष्णां विष्णों अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सिहताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहींद्विमद्विभाति ऋतुंमुझनेंषु। यद्दीदयुच्छवंसर्तप्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुधियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवंः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥ शं नों देवीरभिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोरभिस्रंवन्तु नः॥ प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु व्यः स्याम् पत्यो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥ कर्या नश्चित्र आभुंवदूती सुदावृधः सर्खां। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्लिरक्रमीदसंनन्मातरं पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पद्वीः केवीनामृषिर्विप्राणां मिह्षो मृगाणांम्। श्येनो गृप्राणाः स्विधितिर्वनांनाः सोमः प्वित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तम्स्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सिहताय केतवे नमः॥९॥ ॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

#### ॥नक्षत्रसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणे अष्टकम् - ३/प्रश्नः - १)

(तैत्तिरीय संहितायां काण्डम् - ३/प्रपाठकः - ५/अनुवाकः -१)

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः। नक्षेत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमासां विचक्षणम्। हृविरासं जुंहोतन। यस्य भान्तिं र्श्मयो यस्यं कृतवंः। यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वां। स कृत्तिंकाभिर्मित्वसानः। अग्निर्नो देवः सुंविते देधातु॥१॥ प्रजापंते रोहिणी वेतु पत्नीं। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभानः। सा नों यज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवेम श्रदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां रूपाणिं प्रतिमोदंमाना। प्रजापंति ह्विषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजां मृगशीर्षेण आगन्नं। शिवं नक्षंत्रं प्रियमंस्य धामं। आप्यायंमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु। यत्ते नक्षंत्रं मृगशीर्षमस्ति। प्रिय॰ राजन् प्रियतंमं प्रियाणांम्। तस्मै ते सोम ह्विषां विधेम। शं नं एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे॥३॥ आर्द्रयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानां पतिरिघ्नियानांम्। नक्षेत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नः प्रजा रिष्ट्रमोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिणो वृणक्तः। आर्द्रा नक्षेत्रं जुषता ह्विनेः। प्रमुश्चमानौ दिर्तानि विश्वाः। अपाघश र सन्नुदतामरांतिम्॥४॥

पुनेर्नो देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनेर्वसू नः पुन्रेतां यज्ञम्। पुनेर्नो देवा अभियंन्तु सर्वें। पुनेः पुनर्वो ह्विषां यजामः। पुवा न देव्यदितिरन्वा। विश्वंस्य भूत्री जगंतः प्रतिष्ठा। पुनेर्वसू ह्विषां वर्धयंन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायंमानः। तिष्यं नक्षंत्रम्भि सम्बंभूव। श्रेष्ठां देवानां पृतंनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिंर्नः परिपातु पृश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्रंयः स्याम॥६॥ इद॰ स्पेभ्यों ह्विरंस्तु जुष्टम्ं। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नः स्पर्भा ह्वमागंमिष्ठाः। ये रोचने सूर्यस्यापिं सुर्पाः। ये दिवं देवीमनुंस्श्चरंन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्ं। तेभ्यः

स्पॅभ्यो मधुंमञ्जहोमि॥७॥

उपंहूताः पितरो ये मघासं। मनौजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमार्गमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनंग्निदग्धाः। येऽमं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चं विद्मयाः उं च न प्रविद्मा मघासं यज्ञः सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥

गवां पितः फल्गुंनीनामिस् त्वम्। तदंर्यमन् वरुणिमत्र चारुं। तं त्वां वय र संनितार र सनीनाम्। जीवा जीवंन्तमुप् संविशेम। येनेमा विश्वा भुवंनािन सिक्षंता। यस्यं देवा अनुसंयन्ति चेतंः। अर्यमा राजाऽजर्स्तु विष्मान्। फल्गुंनीनामृष्भो रोरवीित॥९॥

श्रेष्ठों देवानां भगवो भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनी्स्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रम्जर्रं सुवीर्यम्। गोमदश्वंवदुप्सन्नुं-देह। भगों ह दाता भग इत्प्रंदाता। भगों देवीः फल्गुंनी्राविवेश। भगस्येत्तं प्रंस्वं गंमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥१०॥

आयांतु देवः संवितोपंयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहुन्

हस्तर् सुभगं विद्यनापंसम्। प्रयच्छंन्तं पपुंरिं पुण्यमच्छं। हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिंगृभ्णीम एनत्। दातारंमुद्य संविता विदेय। यो नो हस्तांय प्रसुवातिं यज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षेत्रम्भ्येति चित्राम्। सुभगं संसं युव्ति श्रेचेमानाम्। निवेशयंत्रमृतान्मर्त्या श्रेश्च। रूपाणि पि श्वन् भ्वंनानि विश्वा। तत्रस्त्वष्टा तदुं चित्रा विचेष्टाम्। तत्रक्षेत्रं भूरिदा अंस्तु मह्मम्। तत्रं प्रजां वीरवंती श्रमोतु। गोभिनीं अश्वैः समनक्तु युज्ञम्॥१२॥

वायुर्नक्षंत्रम्भ्यंति निष्ट्राम्। तिग्मशृंङ्गो वृष्भो रोरुंवाणः। समीरयन् भवंना मात्रिश्वां। अप द्वेषा रेसि नुदतामरातीः। तन्नो वायुस्तदु निष्ट्रां शृणोतु। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अस्तु मह्मम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वां॥१३॥

दूरम्स्मच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणतां तद्विशांखे। तन्नो देवा अनुंमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभयं नो अस्तु। नक्षंत्राणामधिपत्नी विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भुवंनस्य गोपौ। विष्चः शत्रूंनप्बाधंमानो। अप क्षुधं नुदतामरांतिम्॥१४॥
पूर्णा पृश्चादुत पूर्णा पुरस्तांत्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय।
तस्यां देवा अधिसंवसंन्तः। उत्तमे नाकं इह मांदयन्ताम्।
पृथ्वी सुवर्चा युवृतिः स्जोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभंमाना।
आप्याययंन्ती दुरितानि विश्वाः। उरुं दुहां यजमानाय
यज्ञम्॥१५॥

ऋद्धारमं ह्व्यैर्नमंसोप्सद्यं। मित्रं देवं मित्र्धेयं नो अस्तु। अनूराधान् ह्विषां वर्धयंन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधा स् इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पृथिभिर्देवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतैर्न्तरिक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामनु नक्षेत्रमेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र् तूर्ये तृतारं। तस्मिन्वयम्मृतं दुहानाः। क्षुधं तरम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुरन्दरायं वृष्भायं धृष्णवें। अषांढाय सहमानाय मीढुषें। इन्द्राय ज्येष्ठा मधुमृद्दुहाना। उरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा।

गोभिर्नक्षेत्रं पृशुभिः समंक्तम्। अहंभूयाद्यजंमानाय मह्यम्ं। अहंनी अद्य सुंविते देधातु। मूलं नक्षेत्रमिति यद्वदेन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजाये शिवमंस्तु मह्यम्॥१८॥ या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यासांमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैशन्तीरुत प्रांसचीर्याः। यासांमषाढा मधुं भृक्षयंन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥१९॥

तन्नो विश्वे उपं शृण्वन्तु देवाः। तदंषाढा अभिसंयंन्तु यज्ञम्। तन्नक्षंत्रं प्रथतां पृश्भ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजंमानाय कल्पताम्। शुभ्राः कृन्यां युवतयः सुपेशंसः। कृम्कृतः सुकृतों वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् ह्विषां वर्धयंन्तीः। अषाढाः काम्मुपंयान्तु यज्ञम्॥२०॥

यस्मिन् ब्रह्माभ्यजंयत्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूंच सर्वम्ँ। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियं दधात्वहंणीयमानम्। उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विचंष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतंनाः सञ्जयम। तन्नो देवासो अनुंजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्तिं श्रोणाम्मृतंस्य गोपाम्। पुण्यांमस्या उपंश्णोमि वाचम्। मृहीं देवीं विष्णुंपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचीं मेनार ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुंरुरुगायो विचंक्रमे। मृहीं दिवें पृथिवीम्न्तिरक्षम्। तच्छ्रोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्युः श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तात्। संवृत्स्रीणंममृत स्वस्ति। यज्ञं नः पान्तु वसंवः पुरस्तात्। दक्षिणतोऽभियंन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षंत्रम्भि संविशाम। मा नो अरांतिर्घशृ स्साऽगर्न् ॥२३॥ क्षृत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षंत्राणा श्रृतिभेष्वविसेष्ठः। तो देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्रृत सहस्रां भेषजानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वं अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षंत्र श्रृतिभेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्धेषुजानि॥२४॥

अज एकंपादुदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां भूतानिं प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रस्वं यंन्ति सर्वें। प्रोष्ठपदासों अमृतंस्य गोपाः। विभ्राजंमानः समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुह्दगुन्द्याम्। तर सूर्यं देवम्जमेकंपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुंयन्ति सर्वे॥२५॥

अहिंबुंध्रियः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुंषाणाम्। तं ब्राह्मणाः सोम्पाः सोम्यासंः। प्रोष्ठपदासों अभिरंक्षन्ति सर्वे। चृत्वार् एकंम्भि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् वदंन्ति। ते बुध्रियं परिषद्य स्तुवन्तः। अहिर् रक्षन्ति नर्मसोपसद्यं॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थांम्। पुष्टिपतीं पशुपा वार्जवस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पशून् रेक्षतु रेवतीं नः। गावों नो अश्वार् अन्वेतु पूषा। अत्रर् रक्षंन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर् सनुतां यर्जमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्धिनांवश्वयुजोपंयाताम्। शुभुङ्गिमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षंत्र ह्विषा यजंन्तौ। मध्वासम्पृंक्तौ यजुंषा समंक्तौ। यौ देवानां भिषजौं हव्यवाहौ। विश्वंस्य दूतावृमृतंस्य गोपौ। तौ नक्षंत्रं जुजुषाणोपंयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंवान् विचंष्टाम्। लोकस्य राजां मह्तो महान् हि। सुगं नः पन्थामभंयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यविश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र॰ ह्विषां यजाम। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु॥२९॥

भरंणीर्भरन्तु॥२९॥ निवेशंनी सङ्गमंनी वसूंनां विश्वां रूपाणि वसूँन्यावेशयंन्ती। सहस्रपोष १ सुभगा रराणा सा न आगुन्वर्चसा संविदाना॥ यत्ते देवा अदंधुर्भाग्धेयममावास्ये संवसंन्तो महित्वा। सा नो यज्ञं पिंपृहि विश्ववारे रुयिं नों धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

# ॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैं स्तुष्टुवा र संस्तृनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवलं कर्तांऽसि। त्वमेव केवलं धर्तांऽसि। त्वमेव केवलं हर्तांऽसि। त्वमेव सर्वं खिल्वदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मांऽसि नित्यम्॥१॥

ऋतं विच्म। संत्यं विच्म॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वृक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पृश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्। अवाध्रात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहिं सम्नतात्॥३॥

त्वं वाङ्क्यस्त्वं चिन्म्यः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वं ज्ञानमयो

विज्ञानंमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वंस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्विय लयंमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नुभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमितां पदानि॥५॥

त्वं गुणत्रंयातीतः। त्वम् अवस्थात्रंयातीतः। त्वं देहत्रंयातीतः। त्वं कालत्रंयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रंयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायंन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गुणादिं पूर्वमृचार्यं वर्णादिं तंदनन्तरम्। अनुस्वारः पंरतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुंस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चौन्त्य-रूपम्। बिन्दुरुत्तंररूपम्। नादः सन्धानम्। सर्हिता सन्धिः। सेषा गणेशविद्या। गणंक ऋषिः। निचृद्गायंत्रीच्छुन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥७॥ एकदन्तायं विद्महे वऋतुण्डायं धीमहि।

तन्नो दन्ती प्रचोदयाँत्॥८॥

एकदन्तं चंतुर्ह्स्तं पाशमंङ्कश्धारिणम्।

रदं च वर्रदं ह्स्तैर्बिभ्राणं मूंषकध्वजम्॥

रक्तं लम्बोदंरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

रक्तगन्धानुंलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥

निकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।

भक्तांनुकम्पिनं देवं जगत्कांरणमच्युंतम्। आविर्भूतं चं सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुंरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥९॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीत। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविद्वेर्नं बाध्यते। स सर्वतः सुखंमेधते। स पश्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्यति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविद्वो भव्ति। धर्मार्थकाममोक्षं

चं विन्द्ति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भ्वति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साधयेत्॥११॥

अनेन गणपतिमभिषिश्चति स वाग्मीं भवति। चतुर्थ्यामनश्चन् जपति स विद्यांवान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात्र बिभेति कदांचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजिति स वैश्रवणोपंमो भ्वति। यो लाजैर्यजिति स यशोवान् भ्वति स मेधांवान् भ्वति। यो मोदकसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलमंवाप्रोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजिति स सर्वं लभते स सर्वं लभ्ते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्रांहयित्वा। सूर्यवर्चस्वीं भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जत्वा सिद्धमन्त्रों भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युंपनिषंत्॥१४॥

सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहैं॥ ॐ शान्तुः शान्तुः शान्तिः॥

## ॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः॥

अपैतु मृत्युर्मृतं न आगंन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतिरिवाभिनंः शीयता १ रियः स च तान्नः शचीपितिः॥१॥ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नंः प्रजा १ रीरिषो मोत वीरान्॥२॥

वातं प्राणं मनसाऽन्वा रंभामहे प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नों मृत्योस्त्रायतां पात्वश्हंसो ज्योग्जीवा जुरामंशीमहि॥३॥

अमुत्र भ्यादध् यद्यमस्य बृहंस्पते अभिशंस्तेरम्ंशः। प्रत्यौहताम्श्वनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचीभिः॥४॥ हिर्॰ हरंन्तमनुंयन्ति देवा विश्वस्येशांनं वृष्मं मंतीनाम्। ब्रह्म सरूपमनुंमेदमागादयंनं मा विवंधीर्विक्रंमस्व॥५॥ शल्कैर्ग्निमंन्थान उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोरं-ऋध्वाऽतिं मृत्युं तंराम्यहम्॥६॥ मा छिंदो मृत्यो मा वंधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां

मा में रीरिष् आयुंरुग्र नृचक्षंसं त्वा ह्विषां विधेम॥७॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा नु उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥८॥ मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नों रुद्र भामितो वंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयक् स्याम् पत्यो रयीणाम्॥१०॥

यतं इन्द्रं भयांमहे ततों नो अभयं कृधि। मघंवन्छ्ग्धि तव तत्रं ऊतये विद्विषो विमृधों जिह्न॥११॥ स्वस्तिदा विशस्पतिंर्वृत्रहा विमृधों वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः॥१२॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। १३॥

अपंमृत्युमपृक्षुधम्। अपेतः श्रुपर्थं जिहि। अर्धा नो अग्रु आर्वह। रायस्पोषर्ं सहस्रिणम्॥१४॥

ये ते सहस्रम्युतं पाशाः। मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं माययाः। सर्वानवयजामहे॥१५॥

जातवेदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदंः। स नंः

पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धंं दुरिताऽत्यग्निः॥१६॥ भूर्भुवः स्वः। ओजो बलम्। ब्रह्मं क्षत्रम्। यशो महत्। सत्यं तपो नाम। रूपमुमृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मनु आयुः। विश्वं यशो महः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानुरो यदिं वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्ददभ्यावंवृत्स्व॥१७॥ मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भूः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भुर्वः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धता स्वंः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भूर्भुवः सुवंः। मृत्युर्नश्यत्वायुर्वर्धताम्॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – ३/अनुवाकः – १५)

हरिष्ट्रं हर्रन्तमनुंयन्ति देवाः। विश्वस्येशानं वृष्भं मंतीनाम्। ब्रह्म सरूपमनुंमेदमागात्। अयनं मा विवधीर्विक्रमस्व। मा छिदो मृत्यो मा वधीः। मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष् आयुंरुग्र। नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम। सद्यश्चंकमानायं। प्रवेपानायं मृत्यवे॥१॥

प्रास्मा आशां अशृण्वन्। कामेनाजनयन्पुनः। कामेन मे काम आगाँत्। हृदंयाद्भृदंयं मृत्योः। यदमीषांमदः प्रियम्। तदैतूपमाम्भि। परं मृत्यो अनु परेहि पन्थाँम्। यस्ते स्व इतरो देवयानाँत्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि। मा नः प्रजाः रीरिषो मोत वीरान्। प्र पूर्व्यं मनसा वन्दंमानः। नार्थमानो वृष्मं चंर्षणीनाम्। यः प्रजानांमेकराण्मानुंषीणाम्। मृत्यं यंजे प्रथमजामृतस्यं॥२॥

#### ॥ महान्यासः ॥

# ॥पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तृ इषंवे नमः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या तृ इषुः शिवतमा शिवं बुभूवं ते धनुः। शिवा शंरुव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।
महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥
अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयता रियः स चं तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः। शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥ ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वालङ्गाय नमः। हिरण्यात्र नमः। हिरण्यात्रङ्गाय नमः। हिरण्यात्रङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्याय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यात्रङ्गाय नमः। भवाय नमः। भविलङ्गाय नमः। शर्वात्रङ्गाय नमः। शर्वात्रङ्गाय नमः। शर्वात्रङ्गाय नमः। शर्वात्रङ्गाय नमः। शर्वात्रङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वलाय नमः। परमाय नमः। परमालङ्गाय नमः। आत्मालङ्गाय नमः। परमालङ्गाय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।

(WEST)

पवित्रम्।

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

एतत्सोमस्यं सूर्यस्य सर्विलिङ्गः एतत्सोमस्यं पाणिमन्नं

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥ (NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिल्लङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



# ॥पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैंभ्योऽथ् घोरैंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भुवोद्भवाय नर्मः॥ प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवतं रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय

नमः कलावकरणाय नमा बलावकरणाय नमा बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मुनोन्मनाय नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवतं रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु

### सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षट्टिंशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्नजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पश्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥ ॐ नमो भगवतें रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

# ॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी।
तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥
शिखाये नमः॥ (TUFT)
अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वेंंऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥
शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)
सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्।
तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥
ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)
ह॰सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदितिंथिर्दुरोणसत्।

नृषद्वंरसदंत्सद्योम्सद्बा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥

नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमो नाद्यायं च वैश्नन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नंस्तोके तनंये मा न आयंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥

नासिकायै<sup>1</sup> नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥

निशीर्यं शुल्यानां मुखां शिवा नः सुमनां भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

 $<sup>^{1}</sup>$ नासिकाभ्यां

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ कण्ठाय नमः॥ (NECK) नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ५ रुद्रा उपंश्रिताः। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK) नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS) या तें हेतिमीं दुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्जुज॥ उपबाह्भ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST) परिं णो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परिं त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघर्वद्भास्तनुष्व मीह्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS) ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणंः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नातिं भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये-

ऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT

AND BACK)

नमों वः किर्िकेभ्यों देवाना ह हदंयेभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमों गुणेभ्यों गुणपंतिभ्यश्च वो नमंः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतंये नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धनुः कपुर्दिनो विशंल्यो बाणवा उत।

अनेशत्रुस्येषंव आभुरस्य निष्क्षिः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पतिरेकं आसीत्।

सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं ह्विषां विधेम॥

नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव।

परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चंर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥

कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषा सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

गृह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेंदा अक्षरं परमं पदम्।

वेदांना शिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥

मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवी रुद्र रीरिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूर्जवतोऽती-

ह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES) स॰सृष्टजिथ्सोमपा बांहशध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परिंदीया रथेन रक्षोहाऽमित्रार् अपबाधंमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES) विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्। सर्वो ह्यंष रुद्रस्तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES) ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यव्युधंः। तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (हहरा) अध्यंवोचदधिवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥

कवचाय हम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS

TOUCHING SHOULDERS)

नमों बिल्मिनें च कव्चिनें च नमंः श्रुतायं च श्रुतस्नायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERSACROSS THE

THREE EYES)

प्र मुंश्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्लियोर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEXAND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON

LEFT PALM)

य पुतावंन्तश्च भूया रंसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा रं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥

इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS

AROUND SELF)



# ॥ मूर्घोदिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्प्ने नमः। नं नासिकाय² नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः।

<sup>&</sup>lt;sup>2</sup>नासिकाभ्यां

यं पादाभ्यां नमः।

## ॥ पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमंः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥ वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमंः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलांय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मंनाय नमः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥ तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ मुखाय नमः॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-

ऽधिंपति्र्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्भे नमः॥



#### ॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्नस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धार्थे जपे विनियोगः॥ हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसीं मध्यमाभ्यां नमः। हंसीं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसीं हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसैं कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भृवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥

॥ध्यानम्॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥ हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥
हंस हंसायं विद्महं परमहंसायं धीमहि।
तन्नों हंसः प्रचोदयाँत्॥
हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः।
एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

**\*\*\*\*\*\*** 

### ॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।
[ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रंमिवृतार्मिन्द्र्ः हवेहवे सुहव्र् शूरमिन्द्रम्।
हुवे नु शृक्रं पुंरुहूतमिन्द्रई स्वस्ति नो मृघवा धात्विन्द्रः॥
लं भूर्भुवः सुवः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥]॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वरोम्।

[नं] रं। त्वन्नों अग्ने वर्रुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं

यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वहितमः शोशुंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमुंमुग्ध्यस्मत्॥ रं भूर्भुवः सुर्वः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये-ऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥]॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[मों] हं। सुगं नः पन्थामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजां।

यस्मिन्नेनम्भ्यिषेश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र र ह्विषां यजाम॥ हं भूर्भुवः सुर्वः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। यमः सपीतो दक्षिणदिश्मारो कर्णयोः स्थाने दं यमाय नमः। यमः सपीतो

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[भं] षं। असुंन्वन्तुमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां

तस्कंरस्यान्वेषि।

अन्यम्स्मिदिंच्छ सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥

षं भूर्भुवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शांस्ते यजंमानो ह्विर्भिः।

अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशश्स मा न आयुः प्रमोषीः॥ वं भूर्भुवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

॥६॥

[वं] यं। आ नों नियुद्धिः श्वितनींभिरध्वरम्। सहस्रिणींभिरुपं-याहि युज्ञम्।

वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥

यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्क्ष्राध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने<sup>3</sup> यं वायवे नमः। वायुः

सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[तें] सं। वय १ सोम ब्रुते तर्व। मर्नस्तुनूषु बिभ्रंतः। प्रजावन्तो अशीमहि॥

सं भूर्भृवः सुवंः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो

त्तरादंग्नाग हृदयस्थान स सामाय नमः। सामः सुप्राता

<sup>&</sup>lt;sup>3</sup>नासिकयोः स्थाने

वरदो भवत्॥ [सोमः संरक्षत्॥]

|| 0 ||

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनं जगंतस्तस्थुष्स्पतिम्। धियं जिन्वमवंसे हमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदेसामसंद्वृधे रेक्षिता पायुरदेब्धः स्वस्तये॥ शं भूर्भवः सुवेः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥] ॥८॥ ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहृतौ सुजोषाः ।

यः शंसीते स्तुवते धार्यि पुज्र इन्द्रीज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। ऊर्ध्विदग्भागे मूर्प्रिस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥] ॥९॥ ॐ भूर्भृवः सुवरोम्। [यं] हीं। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्ष्मरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सुप्रथाः॥ हीं भूर्भृवः सुवंः। विष्णवे चऋहस्ताय नागाधिपतये

गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥]॥१०॥

\*\*\*

### ॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भृवः स्रवंः। ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मां हि॰सीः॥ अं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ आं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ विह्नंरिस हव्यवाहंनो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मां हि॰सीः॥ आं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ इं। नमंः शम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हि सीः॥ इं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ ईं। नमंः शम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ तुथोऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ईं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। ॐ उं। नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च॥ उशिगंसि क्वी रौद्रेणानींकेन पाहि माँ उग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः<sup>4</sup> स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भृवः स्रवंः। ॐ ऊं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अङ्कारिरसि बम्भारी रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ शुन्थ्यूरंसि मार्जालीयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि

<sup>—</sup> <sup>4</sup>भू

मा मा मा हिश्सीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुव्रोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। ॐ लं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ सम्म्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँउग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ ॡं। नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च॥ परिषद्योऽिस पवंमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॡं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ एं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ प्रतक्षांऽसि नमंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मां हि॰सीः॥ एं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ ऐं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ ॐ। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ऋतधामाऽसि सुवंज्योंती रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ औं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ब्रह्मंज्योतिरिस सुवंधीमा रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ औं [ॐ] भूर्भृवः सुव्रोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवंः। ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अजों ऽस्येकंपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि माँ उग्ने पिपृहि मा मा मा हि सी: ॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भृवः सुवंः। ॐ अः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अहिंरसि बुध्नियो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अः [ॐ] भूर्भृवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



## ॥गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थी) न्यासः॥

मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञः सिम्मं देधातु। या इष्टा उषसों निम्नुचेश्च ताः सन्देधामि ह्विषां घृतेने॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबौध्यग्निः स्मिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा इंव प्रवयामुज्जिहांनाः प्रभानवंः सिस्रते नाकमच्छं॥ नाभ्ये नमः॥२॥

नाम्य नमः॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥

मूर्धानं दिवो अंरतिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातम्ग्निम्। कवि सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥

कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभि-वंस्ताम्।

उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥

मुखाय नमः॥५॥

जातवेंदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वान्रो यदि वा वैद्युतोऽसिं।

शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्दद्भ्यावेवृत्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



#### ॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै दश्म १ हूतः प्रत्यंश्रणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स सप्तहूंतोऽभवत्। सप्तहूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत श् सप्तहूंत श्रू सन्तम्। सप्तहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै षष्ठ रहूतः प्रत्यंश्वणोत्। स षड्ढूंतोऽभवत्। षड्ढूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत र षड्ढूंत र सन्तम्। षड्ढ्योतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै पश्चम हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं पश्चंहूत रू सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै चतुर्थ र हूतः प्रत्यंशृणोत्। स चतुर्हतोऽभवत्। चतुर्हतो ह वै नामैषः। तं वा एतं

चतुंर्हृत् सन्तम्। चतुंर्होतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

तमंब्रवीत्। त्वं वै में नेदिष्ठः हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इतिं। तस्मान्नु हैनाः श्रुश्चतुंरहोतार् इत्याचंक्षते। तस्मांच्छुश्रूषुः पुत्राणाः हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो अत्मने नमः॥

#### ॥ शिवसङ्कल्पः॥

येनेदं भूतं भुवंनं भविष्यत् परिगृहीतम्मृतेन् सर्वम्। येनं युज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरंन्ति धीरा यतो वाचा मनंसा चारु यन्ति। यत्सम्मितमनुंसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२॥

येन् कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदर्थेषु धीरौः। यदंपूर्वं यक्षम्नतः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिश्च यङ्गोतिरन्तर्मृतं प्रजास्।

यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥४॥

सुषार्थिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। हत्प्रतिष्ठं यदंजिरं जिवेष्ठं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥५॥

यस्मिनृचः साम् यजू १षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मि १श्वित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे

मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥६॥

यदत्रं षष्ठं त्रिशत रे सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवंनावमाय्यम्। दशं पश्च त्रिर्शतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७॥

यञ्जाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तदं सुप्तस्य तथैवैतिं। दूरङ्गमं

ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥८॥ येनेदं विश्वं जर्गतो बुभूव ये देवापि महुतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमंसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तिरक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशंश्च। येनेदं जगुद्धाप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१०॥ ये मनो हृदंयं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुंषी स्श्चरंन्तं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्। सूक्ष्मौत्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमेस्तु॥१२॥ एकां च दश शतं चं सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च

परार्धश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमेस्तु॥१३॥ ये पंश्च पश्चादश शत सहस्रंमयुतं न्यंर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टंकास्त स् शरीरं तन्मे मर्नः

श्विसंङ्कल्पमंस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। यस्य

योनिं परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१५॥ यस्येदं धीरौः पुनन्तिं क्वयौ ब्रह्माणंमेतं त्वा वृणत् इन्दुम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौरांकाशं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१६॥

परौत्परतंरं चैव यत्पराँचैव यत्पंरम्।
यत्परौत्परंतो ज्ञेयं तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१७॥
परौत्परतंरो ब्रह्मा तत्परौत्पर्तो हंरिः।
तत्परौत्परंतोऽधीशस्तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१८॥
या वेदादिषुं गायत्री सर्वव्यांपी महेश्वंरी।
ऋग्यर्जुः सामांथर्वेश्च तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥
यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वंरम्।

या व द्व महाद्व प्रणव पर्मश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥

प्रयंतः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौं सर्वेषुं वेदेषु पठातें ह्यज् इश्वरः। अकायों निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥ गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बर्लेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२३॥ कैलांसशिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालये। देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥

द्वतास्तत्र माद्न्त् तन्म मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२४॥ विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सम्बाहुभ्यां नमंति सम्पतंत्रैर्द्यावांपृथिवी जनयंन्देव एकस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत सर्वशांस्त्रम्यं विंदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२७॥ मा नो महान्तंमृत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमृत मा नं उिष्टितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिष्ट्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥ मा नंस्तोके तनंये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीरहिवष्मंन्तो

नमंसा विधेम ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥ ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णुपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरेतं विंरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तम १ हदे। सर्वो होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३१॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूवं। य ईशें अस्य द्विपदश्चतुंष्पदः कस्मैं देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥ य औत्मदा बेलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिषं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मै देवायं हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनंः

श्विसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥

गुन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीर्

सर्वभूतानां

तामिहोपंह्वये श्रियं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इद॰ शिवंसङ्कल्प॰ सदा ध्यायंन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥



#### ॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष पृवेद सर्वम्॥ यद्भूतं यच्च भव्यम्॥ उतामृत्त्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पृतावानस्य मिह्मा। अतो ज्याया श्रृश्च पूरुषः। पादौ उस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौ उस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्कांक्रामत्। साश्नानश्चने अभि॥ तस्मौद्धिराडंजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वस्नन्तो अंस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्रख्विः॥ सप्तास्यऽऽं-सन्पर्धियः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन्पुरुषं पृशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिष् प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः।

तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्संर्व-हुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू श्रस्ता श्रश्चेके वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्संर्वहुतंः। ऋचः सामानि जित्ररे। छन्दा श्रेसि जिज्ञिरे तस्मात्।

यजुस्तस्मांदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभ्यादंतः। गावों ह जिज्ञेरे तस्मांत्। तस्मांजाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणोंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः।

ऊरू तदंस्य यद्वैषयंः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णी द्यौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्॥ आदित्यवंणं तमंस्स्तु
पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरेः। नामांनि
कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्ञहारे।
श्रक्तः प्रविद्वान्प्रदिश्श्चतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भवित।
नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः।
तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः सचन्ते।
यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिं देवाः॥
शिरसे स्वाहा॥



#### ॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्धः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्त्ताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजान्मग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भविति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमंच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपित। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वी यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा अस्न वशे॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पल्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मंनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ शिखायै वषट्॥



#### ॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशांनो वृष्मो न युध्मो घंनाघनः क्षोमंणश्चर्षणीनाम्।
सङ्कन्दंनोऽनिमिष एंकवीरः श्तर सेनां अजयत् साकिमिन्द्रंः।
सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्चवनेनं धृष्णुनां।
तिदन्द्रंण जयत् तत्संहध्वं युधो नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सिनंषङ्गिभेर्वशी सङ्स्रंष्टा स युध् इन्द्रों गुणेनं। स्रमृष्टजिथ्सोम्पा बाहुश्ध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिंहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परिं दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रारं अपबाधंमानः। प्रभुअन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयंत्रुस्माकंमेध्यविता रथांनाम्। गोत्रभिदं गोविदं वर्ज्रबाहुं जयंन्तुमज्मं प्रमृणन्तुमोजंसा। इम॰ संजाता अनुं वीरयध्वमिन्द्र॰ सखायोऽनु स॰ रंभध्वम्। बुलुविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रंमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः शतमंन्युरिन्द्रेः। दुश्चवनः पृतनाषाडंयुध्यों ऽस्माक्र् सेनां अवतु प्र युत्सु। इन्द्रं आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा युज्ञः पुर एंतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतों यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य वृष्णो वर्रुणस्य राज्ञं आदित्यानां मरुता । शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषों देवानां जयंतामुदंस्थात्। अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जंयन्तु। अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानुं देवा अवता हवेषु। उद्धर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वंनां मामकानां महा रेसि। उद्देत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषंः। उप्

प्रेत जयंता नरः स्थिरा वंः सन्तु बाहवंः। इन्द्रों वः शर्म

यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवंसृष्टा परां पत् शरंव्ये ब्रह्मंस॰शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश् मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्। उरोवंरीयो वरिवस्ते अस्तु जयंन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रों नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्म यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥



### ॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः – १/प्रश्नः – ८/अनुवाकः – ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपत्येक्मितिरिक्तं यावन्तो गृह्याः समस्तेभ्यः कर्मकरं पशूनाः शर्मास् शर्म यजमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुंषस्वेष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेषजं गवेऽश्वांय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसंति। सुगं मेषायं मेष्यां अवांम्ब रुद्रमंदिमृह्यवं देवं त्र्यंम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः कर्द्यथां नो

वस्यंसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययाँत्। त्र्यंम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमंव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृताँत्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनांवसेन परो मूर्जवतोऽतीृह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृतिंवासाः॥

### ॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमतिरिक्तम्। जनिष्यमाणा प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघांरयति। यदंभिघारयेंत्। अन्तरवचारिण ई रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्ध रुद्रस्यं भाग्धेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपूशुकाया आहुंत्यै नातिष्ठत। असौ तें पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पृशुरितिं ब्र्यात्। न ग्राम्यान् पुशून् हिनस्तिं। नाऽऽरुण्यान्। चृतुष्पुथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पड्ढीशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पर्णेनं जुहोति। सुग्ध्येषा। अथो खल्ं। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकयेत्यांह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसां। तया वा एष हिनस्ति। यर हिनस्तिं। तयैवैनर् सह शंमयति। भेषजं गव इत्याह। यावेन्त एव ग्राम्याः पुशवंः। तेभ्यों भेषुजं करोति। अवाम्ब रुद्रमंदिमहीत्याह। -आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। त्र्यंम्बकं यजामह् इत्यांह। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदाह। उत्किरन्ति। भगस्य लीफ्सन्ते। मूर्ते कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेऽवसं करोतिं। तादगेव तत्। एष तें रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्यै। अप्रंतीक्षमायंन्ति। अपः परिषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्र वा एतें स्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बकैश्चरंन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥

# ॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्ग्यस्त्वं पूषा विध्तः पांसि नु त्मनां। आ वो राजांनमध्वरस्य रुद्र होतांर सत्ययज् रेरोदंस्योः। अग्निं पुरा तंनिय्व्रोरिचत्ताि दिरण्यरूपमवंसे कृण्ध्वम्। अग्निरहोता नि षंसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुरुभावं लोके। युवां कविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः। साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्वामंविदाम गृह्यांम्।

साध्वामकद्ववाति ना अद्य युज्ञस्य जिह्नामावदाम् गृह्याम्। स आयुराऽगाँत्सुर्भिवसानो भृद्रामंकर्देवहूंतिं नो अद्य। अर्कन्दद्ग्निः स्त्नयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधंः समुञ्जन्न। सद्यो जंज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः।

क्षामेंव विश्वा भुवंनानि यस्मिन्त्स सौभंगानि दिधेरे पावके। तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्रे कामांय येमिरे। अश्याम् तं कामंमग्रे तवोत्यंश्यामं र्यि श रंयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजंम्भि वाजयंन्तोऽश्यामं द्युम्नमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने द्युमन्तुमा भेर। वसों पुरुस्पृह र र्यिम्। स श्विंतानस्तंन्यतू रोंचनस्था अजरेंभिनानंदद्भियंविष्ठः। यः पांवकः पुरुतमंः पुरूणि पृथून्यग्निरंनुयाति भवंत्रं। आयुंष्टे विश्वतो दधद्यम्ग्निवंरंणयः। पुनंस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्म र सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने हिवषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गर्व्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्। तस्मैं ते प्रतिहर्यते जातंवेदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परिं प्रथमं जंज्ञे अग्निरस्मद्वितीयं परिं जातवेदाः। तृतीयंमप्सु नृमणा अजंस्रमिन्धांन एनं जरते

सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निर्स्मिह्नितायं परि जातवेदाः। तृतीयंमप्सु नृमणा अजंस्निम्यांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराहुंतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयत्सुरेताः। आ यदिषे नृपतिं तेज् आन्द्रुचि रेतो निषिक्तं द्यौर्भीकै। अग्निः शर्थमनवद्यं युवानः स्वाधियं जनयत्सूदयंच। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपृत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूंतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वः। अग्रे सहंन्तमा भंर द्युम्नस्यं प्रासहां रियम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सहर र्यिर संहस्व आ भंर। त्वर हि सत्यो अद्भंतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वेधसें। स्तोमैर्विधेमाग्नयें। वृद्मा हि सूनो अस्यंद्मसद्वां चुके अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्ं। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः।

अग्न आयू १ पवस् आ सुवोर्जिम वं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनांम्। अग्ने पवस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्पोष १ रियं मियं। अग्ने पावक रोचिषां मृन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् वंक्षि यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवा १ इहाऽऽवंह। उपं युज्ञ १ ह्विश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कृविः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजंन्त ईरते। तव ज्योती १ ष्यूर्चयः॥

### ॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वर शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैयांसि शङ्गयः। त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। श्रयध्वम्। चतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नवमा दंशमेषुं दशमा एंकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पंश्रदशेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोंडशेषुं श्रयध्वम्॥ षोडशाः संप्तदशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अंष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एंकान्नवि शेषुं एकान्नवि शा वि शेषुं श्रयध्वम्। वि शा एंकवि शोषुं श्रयध्वम्। एकवि शा द्वांवि शोषुं श्रयध्वम्। द्वावि शास्त्रंयोवि श्रेषु श्रयध्वम्। त्रयोवि शाश्चंतुर्वि श्रोषुं श्रयध्वम्। चतुर्वि १ शाः पेश्चवि १ शेषुं श्रयध्वम्। पश्चवि १ शाः षंड्वि १ शेषुं श्रयध्वम्॥ षड्वि १ शाः संप्तवि १ शेषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्शा अष्टाविश्शेषु श्रयध्वम्। अष्टाविश्शा

एंकान्नित्र्शेषुं श्रयध्वम्। एकान्नित्र्शेषुं श्रयध्वम्। त्रिष्शा एंकित्रिष्शेषुं श्रयध्वम्। एकित्रिष्शा द्वात्रिष्शेषुं श्रयध्वम्। एकित्रिष्शा द्वात्रिष्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिष्शोषुं श्रयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रंयस्त्रिष्शाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्कांम इदं जुहोमिं। तन्मे समृध्यताम्। वय स्यांम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भवः स्वंः स्वाहां॥ अस्त्राय फट्॥

### ॥पञ्चाङ्गम्॥

हश्सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदतिंथिर्दुरोणसत्।

नृषद्वं रसदंत्सद्योमसद्जा गोजा ऋतं बृहत्॥
प्रतिद्वष्णुंः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भवनानि विश्वा॥ ऋंम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमृक्षीय माऽमृतात्॥ तत्संवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठ सर्वधातंमम्। तुरं भगंस्य धीमहि॥

विष्णुर्योनिं कल्पयत्। त्वष्टां रूपाणिं पि शत्। आसिंश्चत् प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधात् ते॥

### ॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवषां विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगेतो बुभूवं। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं हिवषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची वेन आवः। सबुधियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमस्तश्च विवेः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी चं न इमं युज्ञं मिंमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपंश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा तें मनुतां विष्ठितं जर्गत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैदूराद्दवीयो अपंसेध शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वांनि देव वयुनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जंहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्यांस्ते स्वाहां॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नाः कविश्वस्ता वंहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥

[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



# ॥लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥ वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्। अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥ अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

# ॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्- वायुस्तिष्ठत्। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठत्। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्वा) वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें।

अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका) सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदेये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें।

अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनंसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों मे श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदये। हदयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हदेये। हदेयं मिय। अहम्मृते अमृत्ं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओ्ष्धिवनस्पतयों में लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदंये। हृदंयं मिये। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बलु हदये। हदयं मिया। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाह्)

पूर्जन्यों मे मूर्धि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मृन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आतमा मं आत्मिनं श्रितः। आतमा हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुन्रायुरागांत्। पुनः प्राणः पुन्राकृतमागांत्। वैश्वानरो रश्मिभिवविधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतिस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥) ॥कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः। आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥ ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥ गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥ लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥ अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥ श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥ वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्। जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥ ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥

सन्तप्तहेमखचित ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥ पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तेश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥ स्वर्णरत्रखचित-काश्चीदामविराजिताम् कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥ श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाह् गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥ सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥

# ॥ षोडशोपचार पूजा॥

\*\*\*

### ॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नर्मः। सेनान्ये नर्मः। दिशां च पत्ये नर्मः। नर्मो वृक्षेभ्यो नर्मः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पत्ये नर्मः। नर्मः सुस्पिञ्जराय नर्मः। त्विषीमते नर्मः। पथीनां पर्तये नर्मः। नर्मो बभ्रुशाय नर्मः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पत्ये नर्मः। नमो हरिकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पुष्टानां पतंये नमंः। नमों भुवस्यं हेत्यै नमंः। जगतां पतिये नर्मः। नर्मो रुद्राय नर्मः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पत्तेये नर्मः। नमः सूताय नमः। अहंन्त्याय नमः। वनानां पत्रंये नमः। नमो रोहिताय नमः। स्थपतंये नर्मः। वृक्षाणां पतंये नर्मः। नमों मित्रणे नमंः। वाणिजाय नमंः। कक्षाणां पतंये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पतंये नर्मः। नमं उच्चेघोंषाय नमंः। आऋन्दयंते नमंः। पत्तीनां पत्तेये नर्मः। नर्मः कृत्स्नवीताय नर्मः। धावते नर्मः। सत्त्वनां पत्तेये नर्मः॥

नमः सहंमानाय नर्मः। निव्याधिने नर्मः। आव्याधिनीनां पतंये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पत्ये नर्मः। नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः। तस्कराणां पत्ये नर्मः। नमो वश्चेते नर्मः। परिवर्श्वते नर्मः। स्तायूनां पतिये नर्मः। नमों निचेरवे नमंः। परिचराय नमंः। अरंण्यानां पतंये नर्मः। नर्मः सृकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसद्यो नर्मः। मुष्णतां पतंये नर्मः। नमोऽसिमद्भो नमः। नक्तं चरद्भो नमः। प्रकृन्तानां पत्ये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः। गिरिचराय नर्मः। कुलुश्चानां पतंये नर्मः। नम इषुंमन्द्रो नमंः। धन्वाविभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमं आतन्वानेभ्यो नमः। प्रतिदर्धानेभ्यश्च नमः। वो नमः। नमं आयच्छंन्द्यो नमंः। विसृजन्द्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमोऽस्यंद्र्यो नर्मः। विध्यंद्र्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नम आसीनेभ्यो नर्मः। शयानेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः स्वपद्धो नर्मः। जाग्रंद्धश्च नर्मः। वो नर्मः। नमस्तिष्ठं स्रो नर्मः। धावं स्रश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः सभाभ्यो नर्मः। सभापंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।

नमो अश्वैभ्यो नर्मः। अश्वेपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमं आव्याधिनीभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नर्मः। नम् उगणाभ्यो नर्मः। तृ इहतीभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों गृत्सेभ्यो नमंः। गृत्सपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो ब्रातेभ्यो नमः। ब्रातंपतिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमों गणेभ्यो नमंः। गणपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों महन्द्यो नमंः। क्षुल्लकेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमों रथिभ्यो नमंः। अरथेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो रथेंभ्यो नर्मः। रथेपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनाभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः क्षुत्तृभ्यो नमः। सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमस्तक्षंभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुलालेभ्यो नर्मः। कर्मारैभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः पुञ्जिष्टेभ्यो नमः। निषादेभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमं इपुकुद्धो नमंः। धन्वकुद्धश्च नमंः। वो नमंः।

नमों मृग्युभ्यो नमंः। श्वनिभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमः श्वभ्यो नमंः। श्वपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः॥

नमों भवार्य च नमंः। रुद्रार्य च नमंः। नमः शर्वायं च नमः। पशुपतंये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नमंः। शितिकण्ठांय च नमंः। नमः कपर्दिने च नमः। व्युप्तकेशाय च नमः। नमः सहस्राक्षायं च नमः। शतधंन्वने च नमः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मीदुष्टंमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमौ हस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमों वृद्धार्यं च नमः। संवृध्वेने च नमः। नमो अग्नियाय च नमंः। प्रथमायं च नमंः। नमं आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमं ऊर्म्याय च नमंः। अवस्वन्याय च नमंः। नर्मः स्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥

नमों ज्येष्ठायं च नमंः। कनिष्ठायं च नमंः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपरजायं च नमः। नमों मध्यमायं च नमंः। अपगल्भायं च नमंः। नमों जघन्यांय च नमंः। बुध्नियाय च नमंः। नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिसर्याय च नमः। नमो याम्यांय च नमंः। क्षेम्यांय च नमंः। नमं उर्वर्याय च नमंः। खल्याय च नमंः। नमः श्लोक्यांय च नमः। अवसान्यांय च नमः। नमो वन्यांय च नमंः। कक्ष्यांय च नमंः। नमः श्रवायं च नमः। प्रतिश्रवायं च नमः। नमं आशुषेणाय च नर्मः। आश्र्रथाय च नर्मः। नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः। नमों वर्मिणें च नमंः। वरूथिने च नमंः। नमों बिल्मिने च नमंः। कवचिने च नमंः। नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतसेनायं च नमः॥

नमो दुन्दुभ्याय च नमः। आहुनुन्याय च नमः।

नमों धृष्णवें च नमंः। प्रमृशायं च नमंः। नमों दूतायं च नमंः। प्रहिताय च नमंः। नमों निषङ्गिणें च नमंः। इषुधिमतें च नमंः। नमंस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनं च नमंः। नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वंने च नमः। नमः सुत्योय च नमः। पथ्याय च नमः। नमः काट्याय च नमः। नीप्याय च नमः। नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः। नमों नाद्यायं च नमंः। वैशन्तायं च नमंः। नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमंः। अवर्ष्यायं च नमंः। नमों मेघ्यांय च नमंः। विद्युत्यांय च नमंः। नमं ईध्रियांय च नमंः। आतप्यांय च नमंः। नमो वात्याय च नमंः। रेष्मियाय च नमंः। नमों वास्तव्याय च नमंः। वास्तुपाय च नमंः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नमस्ताम्रायं च नमः। अरुणायं च नमः। नमः शङ्गायं च नमः। पृशुपतंये च नमः। नमं उग्रायं च नमंः। भीमायं च नमंः। नमों अग्रेवधायं च नमंः। दूरेवधायं च नमंः। नमों हन्ने च नमंः। हनीयसे च नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिंकेशेभ्यो नमंः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शम्भवे च नर्मः। मयोभवें च नमः। नमः शङ्करायं च नमः। मयस्करायं च नमंः। नमंः शिवायं च नमंः। शिवतंराय च नर्मः। नमस्तीर्थ्याय च नर्मः। कूल्याय च नमः। नमः पार्याय च नमः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नमंः। नमं आतार्याय च नमंः। आलाद्यांय च नर्मः। नमः शष्य्यांय च नर्मः। फेन्यांय च नर्मः। नर्मः सिकत्यांय च नर्मः। प्रवाह्यांय च नमंः॥

नमं इरिण्याय च नमः। प्रपृथ्याय च नमः। नमः कि॰शिलायं च नमः। क्षयंणाय च नमः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। पुलस्तये च नर्मः। नमो गोष्ठाय च नमः। गृह्याय च नमः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नमः काट्याय च नमः। गह्वरेष्ठायं च नमः। नमों ह्रदय्याय च नमंः। निवेष्याय च नमंः। नर्मः पारस्याय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्यांय च नमः। हरित्यांय च नमः। नमो लोप्याय च नर्मः। उलप्याय च नर्मः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नमः पर्ण्याय च नमः। पर्णशद्याय च नमः। नमोऽपगुरमाणाय च नमेः। अभिघ्नते च नमेः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नमंः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना हदंयेभ्यो नर्मः। नमों विक्षीणकेभ्यो नमंः। नमों विचिन्वत्केभ्यो नमंः।

नमं आनिर्हतेभ्यो नमंः। नमं आमीवत्केभ्यो नमंः।

### ॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेमांऽरो मो एषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तुनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रद्रायं तवसें कपर्दिनें क्षयद्वींराय प्रभंरामहे मतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्स्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीमम्परहुबुमुग्रम्। मृडा जीरेत्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मितिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व् मीद्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीद्वंष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यमस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥

### ॥ नमस्काराः ॥

सहस्रांणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्यांम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वं उन्तरिक्षे भ्वा अधि। तेषा र सहस्रयोज्ने-ऽव्धन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाच्राः। तेषा र सहस्रयोज्नेऽव्धन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ष रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार्ष सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जंरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः। तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः। तेषा १ सहस्रयोज्ने-ऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥ ये तीर्थानि प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निष्क्षिणंः। तेषा १ सहस्रयोज्नेऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥ य एतावंन्तश्च भूया रंसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा रं सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येषामन्नमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमीं रुद्रेभ्यो येंऽन्तिरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दर्श दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥

### ॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंर्धन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वार्क्च मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्ञरा च म आत्मा च मे तन्श्चं मे शर्मं च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामंश्च मेऽमंश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा च मे मिह्मा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे वृष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे श्रीडा च मे मोदंश्च मे जातं च मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वि्त्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यचं मे सुगं च मे सुपर्थं च म ऋद्धं च म ऋद्धिंश्च मे कृप्तं चं मे कृप्तिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥
शं चं मे मयंश्च मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्च मे
सौमन्सश्चं मे भूद्रं चं मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे
भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धृता चं मे क्षेमंश्च मे
धृतिश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे स्विचं मे ज्ञातं च मे सूश्चं मे
प्रसूश्चं मे सीरं च मे ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं
च मेऽनामयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च
मेऽभंयं च मे सुगं चं मे श्यंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च
मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पर्यक्ष मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षिंतिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षुंच मे ब्रीह्यंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामाकांश्व मे नीवारांश्व मे॥४॥

अश्मां च मे मृत्तिका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकंताश्च मे वनस्पतंयश्च मे हिरंण्यं च मेऽयंश्च मे सीसं च मे त्रपुंश्च मे श्यामं च मे लोहं च मेऽग्निश्च म आपश्च मे वीरुधंश्च म ओर्षधयश्च मे कृष्टपच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्याश्चे मे पुशवं आरुण्याश्चं युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वस् च मे वस्तिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥ अग्निश्चं म इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म इन्द्रंश्च मे सविता चं म इन्द्रेश्च मे सर्रस्वती च म इन्द्रेश्च मे पूषा चं म इन्द्रेश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रेश्च मे मित्रश्चं म इन्द्रेश्च मे वर्रुणश्च म इन्द्रेश्च मे त्वष्टां च म इन्द्रेश्च मे धाता चं म इन्द्रेश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रेश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रेश्च मे पृथिवी च म इन्द्रेश्च मेऽन्तरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे चौश्चं म् इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म इन्द्रंश्च मे मूर्धा चं म इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥ अर्शुश्चं मे रुश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपार्श्यश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुऋश्चं मे मुन्थी चं म आग्रयणश्चं मे

वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वानरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नर्श्व मे वैश्वदेवर्श्व मे मरुत्वतीयाँश्व मे माहेन्द्रश्च म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतर्श्व मे हारियोजनर्श्व मे॥७॥ इध्मर्श्व मे बर्हिश्च मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे सुचंश्च मे चमुसार्श्व मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वार्श्व मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायुव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च मु आग्नीं प्रं च मे हिव्धानं च मे गृहार्श्व मे सदेश्व मे पुरोडाशाँश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥ अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदिंतिश्च मे दितिंश्च मे द्यौश्चं मे शक्करीरङ्गलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्षं मे सामं च मे स्तोमंश्च में यर्जुश्च में दीक्षा च में तर्पश्च म ऋतुर्श्व में व्रतं च मेऽहोरात्रयों वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे युज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥ गर्भाश्च मे वत्सार्श्व मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी च मे दित्यवार्च मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्व मे पश्चावी चं मे त्रिवत्सर्श्व मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाचं मे तुर्योही च मे पष्ठवाचं मे पष्ठौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहचं मेऽनड्वां चं मे धेन्श्चं म् आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेन कल्पता ॥ श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥१०॥ एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि शतिश्च मे त्रयों वि शतिश्च मे पश्चेवि शतिश्च मे सप्तवि ईशतिश्च मे नवंवि शतिश्च म एकंत्रि शच मे त्रयंस्त्रि शच मे चतस्त्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंर्विश्शतिश्च मेऽ छावि ५ शतिश्व मे द्वात्रि ५ शच मे पद्गि ५ शच चत्वारि १ शर्च मे चतुंश्चत्वारि १ शर्च मेऽ ष्टाचंत्वारि १ शर्च मे वाजंश्च प्रसवश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्घा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥ महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥ इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृहस्पतिंरुक्थामुदानिं शश्सिषद्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मध् वक्ष्यामि मध् वदिष्यामि मध्मतीं देवेभ्यो

वाचंमुद्यास १ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभायें पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरेंभ्योऽथ घोरेंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि।

तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपित्ब्रह्मणो-ऽधिपित्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ तत्पुरुंषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयांत्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



# ॥ प्रार्थना ॥



### ॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्क्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥ नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः।

दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

### ॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमिनशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम्॥ ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भित्त-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पश्चपूजा॥ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।

हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि।

यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।

रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि।

वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं केवीनाम्प्-मश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वत्रूतिभिः सीद् सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

शं चं में मयंश्च में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्च में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्च में वस्यंश्च में यशंश्च में भगंश्च में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्च में धृतिश्च में विश्वं च में महंश्च में संविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्च में प्रसूर्श्च में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनांमयच में जीवातुंश्च में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शयंनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥३॥

# ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

### ॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नर्मस्ते रुद्र मन्यवं उतो तु इषंवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाह्भ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म र सुमना असंत्॥ अध्यंवोचदिधवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्व सर्वां अम्भयन्त्सर्वांश्व यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभुः सुंमङ्गलंः। ये चेमा रद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैंषा हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्त्रदंशत्रुदहार्यः॥ उतेनं विश्वां भूतानि स दृष्टो

मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीदुषे॥ अथो ये अंस्य सत्वानोऽहं तेभ्योंऽकरं नर्मः। प्र मुंश्र धन्वंनस्त्वमुभयोरार्ह्रियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेंषुधे॥ निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धर्नुः कपर्दिनो विशंल्यो बार्णवा उत्। अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निष्क्षथिः। या तें हेतिमींदुष्टम् हस्तें बुभूवं ते धर्नुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिन्धुज। नमस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें॥ उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिरुस्मान्वृणक्त विश्वतं:॥ अथो य इंषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेंहि तम्॥१॥ [नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकार्य त्रिका[ला]ग्निकालार्य कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युअयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥] नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पत्ये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पत्ये नमो नमेः सस्पिश्चराय त्विधीमते पथीनां पतंये नमो नमों बस्रुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पतंये नमो नमो हिरेकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमों भवस्यं हेत्ये जगंतां पतंये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्रांणां पतंये नमो नमेः सूतायाहंन्त्याय वनांनां पतंये नमो नमो रोहिताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमों मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षांणां पतंये नमो नमों भुवन्तयें वारिवस्कृतायौषंधीनां पतंये नमो नमं उच्चेर्घोषायाक्रन्दयंते पत्तीनां पतंये नमो नमेः कृत्स्रवीताय धावंते सत्वंनां पतंये नमंः॥२॥

नमः सहंमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतंये नमो नमेः ककुभायं निषक्षिणं स्तेनानां पत्ये नमो नमो निषक्षिणं इष्धिमते तस्कराणां पत्ये नमो नमो वश्चते परिवर्श्वते स्तायूनां पत्ये नमो नमो निचेरवे परिचरायारंण्यानां पत्ये नमो नमो निचेरवे परिचरायारंण्यानां पत्ये नमो नमे उद्यानां पत्ये नमो नमे उद्यानिन्यो जिघारं सद्यो मुष्णतां पत्ये नमो नमे उष्णीषिणं गिरिचरायं कुलुश्चानां पत्ये नमो नम् इष्मद्यो धन्वाविभ्यंश्च वो नमो नमं आतन्वानेभ्यः प्रतिद्धानेभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छंद्यो विसृजद्यंश्च वो नमो नमो उस्यंद्यो वे नमो नमे आयच्छंद्यो विसृजद्यंश्च वो नमो नमो नमोऽस्यंद्यो

विध्यं द्राश्च वो नमो नम आसीनेभ्यः शयांनेभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्धो जाग्रंद्धश्च वो नमो नमस्तिष्ठंद्धो धावंद्धश्च वो नमो नमें सभाभ्यः सभापितिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वंपतिभ्यश्च वो नर्मः॥३॥ नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ हुतीभ्यंश्च वो नमो नमों गृत्सेभ्यों गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातंपतिभ्यश्च वो नमो नमों गणेभ्यों गणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुलकेभ्यश्च वो नमो नमों रथिभ्योंऽरथेभ्यंश्च वो नमो नमो रथेँभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमंः, क्षत्तृभ्यंः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृन्धों धन्वकृद्धंश्च वो नमो नमों मृगयुभ्यंः श्वनिभ्यंश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमंः॥४॥ नमों भवायं च रुद्रायं च नमः शर्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कपर्दिनं च व्युंप्तकेशाय

च नर्मः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नर्मो गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हस्वायं च वामनायं च नमों बृहते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वेने च नमो अग्नियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीघ्रियाय च शीभ्यांय च नमं ऊर्म्यांय चावस्वन्याय च नर्मः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥ नमों ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमों मध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघुन्यांय च बुध्नियाय च नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमों वर्मिणें च वरूथिनें च नमों बिल्मिनें च कवचिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतस्नायं च॥६॥ नमों दुन्दुभ्यांय चाऽऽहनन्यांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निषक्षिणें चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चाऽऽयुधिनं च नमंः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः स्रुत्यांय च पथ्यांय च नमः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमो नाद्यायं च वैश्नन्तायं च नमः कूप्यांय चावट्यांय च नमो वर्ष्यांय चावर्ष्यायं च नमो मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमं ईप्रियांय चाऽऽत्प्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमो वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमं आतार्याय चाऽऽलाद्यांय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च॥८॥

नमं इरिण्यांय च प्रपृथ्यांय च नमः किश्शिलायं च क्षयंणाय च नमः कपर्दिने च पुलुस्तये च नमो गोष्ठांय च गृह्यांय च नम्स्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमों हृद्य्यांय च निवेष्यांय च नमः पा॰स्व्यांय च रजस्यांय च नमः शुष्क्यांय च हिर्त्यांय च नमो लोप्यांय चोलप्यांय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पृण्यांय च पर्णशृद्यांय च नमोऽपगुरमांणाय चाभिघृते च नमं आख्खिदते च प्रख्खिदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृद्देयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिर्ह्तेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एंषां किं चनाऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तुनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषुजी तयां नो मृड जीवसे॥ इमा रुद्रायं तुवसे कपूर्दिने क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्ष्यद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो

अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीमम्पएह्लुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यं तें अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्रयस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चंर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यमस्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥ सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् मंहत्यंर्णवें-उन्तरिक्षे भवा अधिं॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा<del>ँ</del>ः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासंः कपर्दिनंः॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्ं॥ ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निषङ्गिणंः॥ य एतावंन्तश्च भूयार्श्सश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषार्श्व सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्विस्तिभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दथामि॥११॥

[त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्न्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव् बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषज्ञस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वांमहे सौंमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं में विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् युज्ञस्यं

मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनां प्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



## ॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंस्मा वंधन्तु वां गिरं। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसिंतिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्लावश्चं मे श्लातिश्च मे स्वरंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म् आधीतं च मे वार्क्च मे मनंश्च मे चश्चंश्च मे श्लोत्तं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे ज्रा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्षि च मे शरीराणि च मे॥ यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः।

हिर्ण्यगर्भं पंश्यत् जायंमान् स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भंश्च मे जेमा चं मे महिमा चं मे विरमा चं मे प्रथिमा चं मे वृष्मी चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोदंश्व मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋदं चं म ऋदिंश्च मे क्रप्तं चं मे क्रुप्तिंश्च मे मतिश्चं मे सुमतिश्चं मे॥ यस्मात्परं नापंरमस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौस्ति कश्चिंत्। वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शिवः सुप्रीतः

सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥ शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमन्सश्चं मे भूद्रं चं मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धूर्ता चं मे क्षेमंश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे संविचं मे ज्ञात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरं च मे ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्षमं च मेऽनामयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे श्यंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांनृशुः। परेण नाकं निहितं गुहांयां विभ्राजंदेतद्यतंयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चे मे मधुं च मे सिथिश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पुष्टं चे मे पृष्टिश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षितिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षुंच मे ब्रीह्यंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खुल्वांश्व मे गोधूमाँश्च मे म्स्राँश्च मे प्रियङ्गंवश्च मेऽणंवश्च मे श्यामकाँश्च मे नीवाराँश्च मे॥ वेदान्त्विज्ञान्स्निश्चितार्थाः सन्त्यांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाँः। ते ब्रह्मलोके तु पराँन्तकाले परांमृतात्परिंमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च मे मृत्तिंका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकंताश्च मे वनस्पतंपश्च मे हिरंण्यं च मेऽयंश्च मे सीसंं च मे त्रपुंश्च में श्यामं चं में लोहं चं में अग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओर्षधयश्च मे कृष्टपच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्यार्श्च मे पशर्व आरण्याश्चे यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं चे मे वित्तिश्च मे भूतं चं मे भूतिंश्च मे वस्ं च मे वसतिश्चं मे कर्मं च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥ दहं विपापं परमें ऽश्मभूतं यत्पुंण्डरीकं पुरमध्यसङ्स्थम्। तत्रापि दहं गगनंं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसितव्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः स्प्रीतः स्प्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अग्निश्चं म इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म इन्द्रंश्च मे सविता चं म इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म इन्द्रंश्च मे पूषा चं मु इन्द्रंश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रेश्च मे मित्रश्चं म इन्द्रेश्च मे वर्रुणश्च म इन्द्रेश्च मे त्वष्टां च म इन्द्रेश्च मे धाता चं म इन्द्रेश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रेश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रेश्च मे पृथिवी च म इन्द्रेश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च मे द्यौश्चं म इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म इन्द्रंश्च मे मूर्धा चं मु इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म इन्द्रंश्च मे॥ यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्तें च प्रतिष्ठिंतः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः ईशानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अर्श्यं मे रिश्मश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽिंपतिश्च म उपार्श्यं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानंश्च मे शुक्रश्चं मे मुन्थी च म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽितग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वृतीयांश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वृतश्चं मे पौष्णश्चं मे पात्नीवतर्श्व मे हारियोजनर्श्व मे॥ सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमंः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>विजयः</u> सुप्रीतः स्प्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥ इध्मर्श्व मे बर्हिश्वं मे वेदिश्व मे धिर्णियाश्व मे सुचंश्व मे चमसाश्चं मे ग्रावांणश्च मे स्वरंवश्च म उपरवाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलशर्श्व मे वायव्यानि च मे पूतभृच म आधवनीयश्च म आग्नींध्रं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशाँश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥ वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमं श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालांय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलेप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मंनाय नर्मः॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥ अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे

पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्करीर्ङ्गलयो

दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्षं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यजुंश्व मे दीक्षा चं मे तपंश्व म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥ अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः स्प्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥ गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्व मे पश्चावी चं मे त्रिवत्सश्चं मे त्रिवत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्ठवाचं मे पष्ठौही चं म उक्षा चं मे वशा चं म ऋषभश्चं मे वेहचं मेऽनड्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेन कल्पता ॥ श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनों यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥ तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि शतिश्च मे त्रयों वि शतिश्च मे पश्चेवि शतिश्च मे सप्तवि श्रेशतिश्च मे नवंवि शतिश्च एकंत्रि॰शच मे त्रयंस्रि॰शच मे चतंस्रश्च मेऽष्टो चं द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंविंश्शतिश्च मेऽष्टावि ५ शतिश्च मे द्वात्रि ५ शच मे पद्गि ५ शच चत्वारि १ शर्च मे चतुंश्चत्वारि १ शर्च मेऽ ष्टाचंत्वारि १ शर्च मे वार्जश्च प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यिश्रियश्चान्त्यायुनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनुश्चाधिपतिश्च॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥ [इडां देवहर्मनुंर्यज्ञनीर्बृहस्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिषद्विश्वं-देवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यास॰ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्युस्तं मां देवा अवन्तु चमकप्रश्नः 153

शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥] ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ रुद्रपद्पाठः॥

ॐ। गुणानांम्। त्वा। गुणपंतिमितिं गुण-पतिम्। हवामहे। कविम्। कवीनाम्। उपमश्रंवस्तममित्युंपमश्रंवः-तमम्॥ ज्येष्ठराजमितिं ज्येष्ठ-राजम्ं। ब्रह्मणाम्। ब्रह्मणः। पर्ते। एतिं। नः। शृण्वन्। ऊतिभिरित्यूति-भिः। सीद्। सादंनम्॥ नर्मः। ते। रुद्र। मन्यवैं। उतो इतिं। ते। इषंवे। नर्मः॥ नर्मः। ते। अस्तु। धन्वंने। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। उता ते। नमंः॥ या। ते। इषुंः। शिवतमेतिं शिव-तमा। शिवम्। बभूवं। ते। धनुं:॥ शिवा। शरव्यां। या। तवं। तयाँ। नः। रुद्र। मृडय॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तनूः। अघोरा। अपापकाशिनीत्यपाप-काशिनी॥ तयाँ। नः। तनुवाँ। शन्तंमयेति शम्-तमया। गिरिंशन्तेति गिरिं-शन्त्। अभीतिं। चाकशीहि॥ याम्। इषुम्। गिरिशन्तेतिं गिरि-शन्त। हस्तें। (3) बिर्भर्षि। अस्तंवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र। ताम्।

बिभिषे। अस्तवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र्। ताम्। कुरु। मा। हिर्सीः। पुरुषम्। जगत्॥ शिवेनं। वर्चसा। त्वा। गिरिशा अच्छां। वदामसि॥ यथां। नः। सर्वम्। इत्। जगत्। अयक्ष्मम्। सुमना इति सु-मनाः। असंत्॥ अधीतिं।

अवोचत्। अधिवक्तेर्त्यधि-वक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्॥ अहीन्। च। सर्वान्। जम्भयन्। सर्वाः। च। यातुधान्यं इति यातु-धार्न्यः॥ असौ। यः। तामः। अ्रुणः। उत। बुभुः। सुमङ्गल इति सु-मङ्गलः॥ ये। च। इमाम्। रुद्राः। अभितः। दिक्षु। (२) श्रिताः। सुहुस्रुश इति सहस्र-शः। अवेति। एषाम्। हेर्डः। ईमहे॥ असौ। यः। अवसर्पतीत्यंव-सर्पति। नीलंग्रीव इति नीलं-ग्रीवः। विलोहित् इति वि-लोहितः॥ उत। पुनुम्। गोपा इति गो-पाः। अदृश्नन्। अदृशन्। उदृहायं इत्युद-हार्यः॥ उत। एनम्। विश्वां। भूतानिं। सः। दृष्टः। मृडयाति। नः॥ नमंः। अस्तु। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। सहस्राक्षायेतिं सहस्र-अक्षायं। मीढुषें॥ अथो इतिं। ये। अस्य। सत्वांनः। अहम्। तेभ्यः। अकुरम्। नमः॥ प्रेतिं। मुश्च। धन्वंनः। त्वम्। उभयौः। आर्त्नियोः। ज्याम्॥ याः। च। ते। हस्तैं। इषंवः। (३) परेतिं। ताः। भगव इतिं भग-वः। वप॥ अवतत्येत्यंव-तत्यं। धनुंः। त्वम्। सहंस्राक्षेति सहंस्र-अक्ष। शतंषुध इति शतं-इषुधे॥ निशीर्येतिं नि-शीर्यं। शुल्यानांम्। मुखां। शिवः। नः।

सुमना इति सु-मनाः। भुव॥ विज्यमिति वि-ज्युम्। धनुः। कपर्दिनंः। विशंल्य इति वि-श्ल्यः। बाणंवानिति बाणं-वान्। उत॥ अनेशन्। अस्य। इषंवः। आभुः। अस्य। निषङ्गर्थिः॥ या। ते। हेतिः। मीढुष्टमेतिं मीढुः-तम्। हस्तैं। बुभूवं। ते। धर्नुः॥ तयौ। अस्मान्। विश्वतः। त्वम्। अयुक्ष्मयौ। परीति। भुज्॥ नमंः। ते। अस्तु। आयुंधाय। अनांततायेत्यनां-तृताय। धृष्णवे॥ उभाभ्याम्। उता ते। नमंः। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। तर्व। धन्वने॥ परीतिं। ते। धन्वनः। हेतिः। अस्मान्। वृण्क्तु। विश्वतंः॥ अथो इतिं। यः। इषुधिरितींषु-धिः। तवं। आरे। अस्मत्। नीतिं। धेहि। तम्॥ (४) नमंः। हिरंण्यबाहव इति हिरंण्य-बाहवे। सेनान्यं इति सेना-न्यें। दिशाम्। च। पत्ये। नर्मः। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। पुशूनाम्। पत्ये। नर्मः। नमंः। सुस्पिञ्जराय। त्विषींमत् इति त्विषीं-मृते। पृथीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। बुस्रुशायं। विव्याधिन् इति वि-व्याधिने। अन्नानाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। हरिकेशायेति हरि-केशाय। उपवीतिन् इत्युप-वीतिनै। पुष्टानौम्। पत्ये। नमः। नमः। भ्वस्यं। हेत्यै। जगंताम्। पतंये। नमंः। नमंः। रुद्रायं।

आतुताविन इत्यां-तुताविनें। क्षेत्रांणाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। सूतायं। अहंन्त्याय। वनानाम्। पत्रये। नर्मः। नर्मः। (५) रोहिताय। स्थपतंये। वृक्षाणांम्। पतंये। नमंः। नमंः। मन्त्रिणें। वाणिजायं। कक्षांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवन्तये। वारिवस्कृतायेति वारिवः-कृतायं। ओषंधीनाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। उच्चैर्घोषायेत्युचैः-घोषाय। आऋन्दयंत इत्याँ-ऋन्दयंते। पत्तीनाम्। पत्तंये। नमंः। नमंः। कृत्स्रवीतायेतिं कृत्स्र-वीतायं। धावंते। सत्वंनाम्। पतंये। नर्मः॥ (६) नर्मः। सहंमानाय। निव्याधिन इतिं नि-व्याधिनें। आव्याधिनीनामित्याँ-व्याधिनीनाम्। पत्ये। नमः। नमः। कुकुभायं। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनें। स्तेनानांम्। पत्ये। नमंः। नमंः। निषङ्गिण इतिं नि-सङ्गिनें। इषुधिमत इतींषुधि-मतें। तस्कराणाम्। पत्रये। नमंः। नमंः। वश्चते। परिवर्श्चत इति परि-वर्श्वते। स्तायूनाम्। पत्ये। नर्मः। नमेः। निचेरव इतिं नि-चेरवें। परिचरायेतिं परि-चरायं। अरंण्यानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। सृकाविभ्य इति सृकावि-भ्यः। जिघा र सद्भ इति जिघा र सत्-भ्यः। मुष्णुताम्। पतंये। नमंः। नमंः। असिमद्ध इत्यंसिमत्-भ्यः। नक्तम्। चरंद्ध इति चरंत्-भ्यः। प्रकृन्तानामितिं प्र-कृन्तानाम्। पतंये। नमंः। नमंः। उष्णीषिणे। गिरिचरायेतिं गिरि-चरायं। कुलुश्चानाम्। पतंये। नमंः। नमंः। (७)

इषुंमद्भ इतीषुंमत्-भ्यः। धन्वाविभ्य इति धन्वावि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आतन्वानेभ्य इत्याँ-तुन्वानेभ्यः। प्रतिदर्धानेभ्य इति प्रति-दर्धानेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आयच्छंन्य इत्यायच्छंत्-भ्यः। विसृजन्य इतिं विसृजत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अस्यंद्र्यं इत्यस्यंत्-भ्यः। विध्यंद्र्य इति विध्यंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आसीनेभ्यः। शयानेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। स्वपद्ध इति स्वपत्-भ्यः। जाग्रंद्ध इति जाग्रंत्-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। तिष्ठंद्ध इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। सभाभ्यः। सभापंतिभ्य इति सभापंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अश्वैभ्यः। अश्वेपतिभ्य इत्यश्वेपति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (८) नमंः। आव्याधिनींभ्य इत्यां-व्याधिनींभ्यः। विविध्यंन्तीभ्य

इति वि-विध्यन्तीभ्यः। च। वः। नमः। नमः। उगंणाभ्यः। तृ श्हृतीभ्यः। च। वः। नमः। नमः। गृत्सेभ्यः। गृत्सपंतिभ्य

इतिं गृत्सपंति-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। व्रातेभ्यः। व्रातंपतिभ्य इति व्रातंपति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। गणेभ्यः। गणपंतिभ्य इति गणपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। विरूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्य इति विश्व-रूपेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। महन्द्यं इति महत्-भ्यः। क्षुष्ठकेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। रथिभ्य इतिं रथि-भ्यः। अरथेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। रथैंभ्यः। (९) रथंपतिभ्य इति रथंपति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। सेनाभ्यः। सेनानिभ्य इति सेनानि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। क्षत्तृभ्य इति क्षतृ-भ्यः। सङ्ग्रहीतृभ्य इति सङ्ग्रहीतृ-भ्यः। च। वः। नर्मः।

नर्मः। तक्षंभ्य इति तक्षं-भ्यः। रथकारेभ्य इति रथ-कारेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। कुलालेभ्यः। कमरिभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। पुञ्जिष्टेभ्यः। निषादेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। इषुकृज्ध इतींषुकृत्-भ्यः। धन्वकृत्ध इतिं धन्वकृत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नमंः। मृगयुभ्य इतिं मृगयु-भ्यः। श्वनिभ्य इतिं श्वनि-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। श्वभ्य इति श्व-भ्यः। श्वपंतिभ्य इति श्वपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (१०) नमः। भवायं। च। रुद्रायं। च। नमः। शुर्वायं। च। पृशुपतंयु इतिं पशु-पतंये। च। नमंः। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। च। शितिकण्ठायेति शिति-कण्ठाय। च। नर्मः। कपर्दिने। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्त-केशाय। च। नर्मः। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षाय। च। शतर्थन्वन इति शत-धन्वने। च। नर्मः। गिरिशाय। च। शिपिविष्टायेति शिपि-विष्टायं। च। नर्मः। मीढुष्टंमायेतिं मीढुः-तमाय। च। इषुंमत् इतीषुं-मृते। च। नर्मः। ह्रस्वायं। च। वामनायं। च। नर्मः। बृहते। च। वर्षीयसे। च। नर्मः। वृद्धार्य। च। संवृध्वंन इति सम्-वृध्वंने। च। (११) नर्मः। अग्रियाय। च। प्रथमायं। च। नर्मः। आशर्वै। च। अजिरायं। च। नर्मः। शीघ्रियाय। च। शीभ्यांय। च। नर्मः। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्ययित्यव-स्वन्याय। च। नर्मः। स्रोतस्याय। च। द्वीप्याय। च॥ (१२) नमः। ज्येष्ठायं। च। कनिष्ठायं। च। नमः। पूर्वजायेतिं पूर्व-जायं। च। अपूर्जायेत्यंपर-जायं। च। नर्मः। मध्यमायं। च। अपगल्भायेत्यंप-गल्भायं। च। नमंः। जघन्यांय। च। बुध्नियाय। च। नर्मः। सोभ्याय। च। प्रतिसर्यायेति प्रति-सर्याय। च। नर्मः। याम्याय। च। क्षेम्याय। च। नर्मः। उर्वर्याय। च। खल्याय। च। नर्मः। श्लोक्याय।

च। अवसान्यायेत्यंव-सान्याय। च। नमंः। वन्याय। च। कक्ष्याय। च। नमंः। श्रुवायं। च। प्रतिश्रुवायेति प्रति-श्रुवायं। च। (१३)

नर्मः। आशुर्षेणायेत्याशु-सेनाय। च। आशुरंथायेत्याशु-रथाय। च। नर्मः। शूराय। च। अवभिन्दत इत्यंव-भिन्दते। च। नर्मः। वर्मिणै। च। वरूथिनै। च। नर्मः। बिल्मिनै। च। कवचिनै। च। नर्मः। श्रुतायं। च। श्रुत्सेनायेतिं श्रुत-सेनायं। च॥ (१४) नर्मः। दुन्दुभ्याय। च। आहनुन्यायेत्यां-हनुन्याय। च। नर्मः। धृष्णवें। च। प्रमुशायेतिं प्र-मृशायं। च। नमंः। दूतायं। च। प्रहिंतायति प्र-हिताय। च। नमंः। निषङ्गिण इतिं नि-सङ्गिनै। च। इषुधिमत् इतींषुधि-मतें। च। नमंः। तीक्ष्णेषंव इतिं तीक्ष्ण-इषवे। च। आयुधिनैं। च। नर्मः। स्वायुधायेतिं सु-आयुधार्य। च। सुधन्वन इति सु-धन्वने। च। नर्मः। सुत्याय। च। पथ्याय। च। नमंः। काट्याय। च। नीप्याय। च। नमंः। सूद्याय। च। सुरस्याय। च। नर्मः। नाद्याय। च। वैशन्ताय। च। (१५)

नर्मः। कूप्याय। च। अवट्याय। च। नर्मः। वर्ष्याय। च। अवर्ष्याय। च। नर्मः। मेध्याय। च। विद्युत्यायिति वि-द्युत्याय। च। नमंः। ईप्रियांय। च। आतुप्यांयेत्यां-तुप्यांय। च। नमंः। वात्यांय। च। रेष्मियाय। च। नमंः। वास्तुव्यांय। च। वास्तुपायेतिं वास्तु-पायं। च॥ (१६)

नर्मः। सोमाय। च। रुद्रायं। च। नर्मः। ताम्रायं। च। अरुणायं। च्। नमंः। शुङ्गायं। च। पृशुपतंय इति पशु-पत्ये। च। नर्मः। उग्रायं। च। भीमायं। च। नर्मः। अग्रेवधायेत्यंग्रे-वधायं। च। दूरेवधायेतिं दूरे-वधायं। च। नमंः। हन्ने। च। हनीयसे। च। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। नर्मः। तारायं। नमंः। शम्भव इतिं शम्-भवें। च। मयोभव इतिं मयः-भवें। च। नमंः। शङ्करायेतिं शम्-करायं। च। मयस्करायेतिं मयः-करायं। च। नर्मः। शिवायं। च। शिवतंरायेतिं शिव-तराय। च। (१७)

नर्मः। तीर्थ्याय। च। कूल्याय। च। नर्मः। पार्याय। च। अवार्याय। च। नर्मः। प्रतरंणायिति प्र-तरंणाय। च। उत्तरंणायेत्युंत्-तरंणाय। च। नर्मः। आतार्यायेत्याँ-तार्याय। च। आलाद्यायेत्याँ-लाद्याय। च। नर्मः। शष्य्याय। च। फेन्याय। च। नर्मः। सिक्त्याय। च। प्रवाह्यायिति प्र-वाह्याय। च॥ (१८) नमंः। इिरण्याय। च। प्रपथ्यायिति प्र-पथ्याय। च। नमंः। किर्श्वीलायं। च। क्षयंणाय। च। नमंः। कप्रिंनैं। च। पुल्रस्तयें। च। नमंः। गोष्ठ्यायिति गो-स्थ्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। काट्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। काट्याय। च। गृह्वरेष्ठायेति गह्वरे-स्थायं। च। नमंः। हृद्य्याय। च। निवेष्यायिति नि-वेष्याय। च। नमंः। पार्स्य्याय। च। र्जस्याय। च। नमंः। लोप्याय। च। नमंः। लोप्याय। च। उल्प्याय। च। (१९)

नमः। ऊर्व्याय। च्। सूर्म्याय। च। नमः। पृण्याय। च। पृण्श्वायिति पर्ण-श्वाय। च। नमः। अपगुरमाणायत्यंप-गुरमाणाय। च। अभिघ्नत इत्यंभि-घ्नते। च। नमः। आख्विदत इत्या-खिदते। च। प्रख्खिदत इति प्र-खिदते। च। नमः। वः। किरिकेभ्यः। देवानाम्। हृदयेभ्यः। नमः। विक्षीणकेभ्य इति वि-क्षीणकेभ्यः। नमः। विचिन्वत्केभ्यः इति वि-चिन्वत्केभ्यः। नमः। आनिर्हतेभ्य इत्यानः-हृतेभ्यः। नमः। आमीवत्केभ्यः इत्या-मीवत्केभ्यः॥ (२०) द्रापे। अन्यंसः। पते। दरिद्रत्। निलंलोहितेति नीलं-लोहित्॥

एषाम्। पुरुषाणाम्। एषाम्। पशूनाम्। मा। भेः। मा। अरुः।

मो इतिं। एषाम्। किम्। चन। आममत्॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तनः। शिवा। विश्वाहंभेषजीतिं विश्वाहं-भेषजी॥ शिवा। रुद्रस्यं। भेषजी। तयाँ। नः। मृड। जीवसेँ॥ इमाम्। रुद्रायं। तवसेँ। कपर्दिनैं। क्षयद्वीरायेतिं क्षयत्-वीराय। प्रेतिं। भ्रामहे। मृतिम्॥ यथाँ। नः। शम्। असंत्। द्विपद् इतिं द्वि-पदें। चतुंष्पद् इति चतुंः-पदे। विश्वम्ं। पुष्टम्। ग्रामें। अस्मिन्। (२१)

अनांतुरिमित्यनां-तुरम्॥ मृडा। नः। रुद्र। उत। नः। मयंः। कृिष्। क्षयद्वीरायिति क्षयत्-वीरायः। नमंसा। विषेमः। ते॥ यत्। शम्। च। योः। च। मनुः। आयज इत्यां-यजे। पिता। तत्। अश्यामः। तवं। रुद्र। प्रणीताविति प्र-नीतौ॥ मा। नः। महान्तम्। उत। मा। नः। अर्भकम्। मा। नः। उक्षन्तम्। उत। मा। नः। उक्षितम्॥ मा। नः। वधीः। पितरम्। मा। उत। मातरम्। प्रियाः। मा। नः। तनुवंः। (२२)

रुद्र। रीरिषः॥ मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयुंषि। मा। नः। गोषुं। मा। नः। अश्वेषु। रीरिषः॥ वीरान्। मा। नः। रुद्र। भामितः। वधीः। ह्विष्मंन्तः। नमसा। विधेम्। ते॥ आरात्। ते। गोघ्न इतिं गो-घ्ने। उत। पूरुषघ्न इतिं पूरुष-घ्ने।

क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीराय्। सुम्नम्। अस्मे इति। ते। अस्तु॥ रक्षां। च। नः। अधीतिं। च। देव। ब्रूहि। अधां। च। नः। शर्म। यच्छ। द्विबर्हा इति द्वि-बर्हाः॥ स्तुहि। (२३) श्रुतम्। गर्तसदमितिं गर्त-सदम्। युवानम्। मृगम्। न। भीमम्। उपहत्नुम्। उग्रम्॥ मृडा। जरित्रे। रुद्र। स्तवानः। अन्यम्। ते। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। सेनाः॥ परीतिं। नः। रुद्रस्यं। हेतिः। वृण्क्तु। परीतिं। त्वेषस्यं। दुर्मतिरितिं दुः-मतिः। अघायोरित्यंघा-योः॥ अवेतिं। स्थिरा। मघवंद्र्य इति मघवंत्-भ्यः। तनुष्व। मीढ्वः। तोकायं। तनयाय। मृडय॥ मीढुंष्टमेति मीढुं:-तम। शिवंतमेति शिवं-तम। शिवः। नः। सुमना इतिं सु-मनाः। भव॥ परमे। वृक्षे। आयुंधम्। निधायेतिं नि-धायं। कृत्तिम्ं। वसानः। एतिं। चर। पिनांकम्। (२४) बिभ्रंत्। एतिं। गहि॥ विकिंरिदेति वि-किरिद। विलोंहितेति वि-लोहित्। नर्मः। ते। अस्तु। भुगुव इति भग-वः॥ याः। ते। सहस्रम्। हेतयंः। अन्यम्। अस्मत्। नीतिं। वृप्नतु। ताः॥ सहस्रांणि। सहस्रधेतिं सहस्र-धा। बाहुवोः। तवं। हेतयः॥ तासाँम्। ईशांनः। भगव इतिं भग-वः। पराचीनां। मुखाँ।

कृधि॥ (२५)

सहस्राणि। सहस्रश इति सहस्र-शः। ये। रुद्राः। अधीति। भूम्याम्॥ तेषाम्। सहस्रयोजन इति सहस्र-योजने। अवेति। धन्वांनि। तन्मसि॥ अस्मिन्। महति। अर्णवे। अन्तरिक्षे। भवाः। अधि॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठौः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपंश्रिता इत्युपं-श्रिताः॥ ये। वृक्षेषुं। सुस्पिञ्जंराः। नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। विलोहिता इति वि-लोहिताः॥ ये। भूतानांम्। अधिपतय इत्यधि-पतयः। विशिखास इति वि-शिखासंः। कपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीतिं वि-विध्यंन्ति। पात्रेषु। पिबंतः। जनान्॥ ये। पथाम्। पथिरक्षंय इति पथि-रक्षयः। ऐलबृदाः। यव्युर्धः॥ ये। तीर्थानि। (२६) प्रचरन्तीतिं प्र-चरन्ति। सृकावंन्त इतिं सृका-वन्तः। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनः॥ ये। एतावन्तः। च। भूयार्थसः। च। दिशः। रुद्राः। वितस्थिर इति वि-तस्थिरे॥ तेषाँम्। सहस्रयोजन इतिं सहस्र-योजने। अवेतिं। धन्वांनि। तन्मसि॥ नर्मः। रुद्रेभ्यः। ये। पृथिव्याम्। ये। अन्तरिक्षे। ये। दिवि। येषाँम्।

अन्नम्। वातः। वर्षम्। इषंवः। तेभ्यः। दशं। प्राचीः। दशं। दक्षिणा। दशं। प्रतीचीः। दशं। उदीचीः। दशं। ऊर्ध्वाः। तेभ्यः। नमः। ते। नः। मृड्यन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टिं। तम्। वः। जम्भें। द्धामि॥ (२७) त्र्यम्बक्मिति त्रि-अम्बक्म्। यजामहे। सुगन्धिमिति सुगन्धिम्। पृष्टिवर्धनमिति पृष्टि-वर्धनम्॥ उर्वारुकम्। इव। बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीयः। मा। अमृतात्॥ यो। रुद्रः। अग्रौ। यः। अप्रिवत्यंप्-सु। यः। ओषंधीषु। यः। रुद्रः। विश्वाः। भूवना। आविवेशेत्याः-विवेशं। तस्मै। रुद्रायं। नमंः। अस्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ मन्त्रपुष्पम्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरक्नैं स्तुष्टुवा र संस्तनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिंर्दधातु॥ 🕉 शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यों ऽग्नेरायतंनं वेदं॥ आयर्तनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायर्तनम्। आयर्तनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतेनं वेदं। आयतेनवान् भवति॥ आपो वै वायोरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्यं तपंत आयर्तनं वेदं। आयर्तनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत

आयतंनम्॥

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥ य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। नक्षंत्राणि वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो नक्षंत्राणामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै नक्षंत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं॥८२॥ योऽपामायतेनं वेदं। आयतेनवान् भवति। पर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पर्जन्यंस्यऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पर्जन्यंस्यऽऽयतंनम्। आयर्तनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायर्तनं वेदं॥ आयर्तनवान् भवति। संवत्सरो वा अपामायर्तनम्। आयर्तनवान् भवति। यः संवत्सरस्यऽऽयर्तनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै संवत्सरस्यऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। यों ऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥

राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमों वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैंश्रवणो दंदातु। कुबेरायं वैश्रवणायं। महाराजाय नमंः॥
॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

## ॥ दशशान्तयः ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैं स्तुष्टुवा र संस्तनूभिंः। व्यशेम देवहिंतुं यदायुंः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमंः पृथिव्यै नम ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते करोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥२॥ नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यें वाचे नमो नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नम ऋषिंभ्यो मन्नकृद्धो मन्नपितिभ्यो मा मामृषंयो मञ्जकृतों मञ्जपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मञ्जकृतों मत्रुपतीन्परादां वैश्वदेवीं वाचमुद्यास शिवामदस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापृती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों वदिष्ये ब्रह्मं वदिष्ये सत्यं वंदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजायै पशूनां भूयादुप्स्तरंणमृहं प्रजायै पशूनां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योमां पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विदष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास १ शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥३॥ शं नो वार्तः पवतां मात्रिश्वा शं नंस्तपतु सूर्यः। अहांनिशं भंवन्तु नः श॰ रात्रिः प्रतिंधीयताम्। शमुषा नो व्यंच्छतु शर्मादित्य उदेतु नः। शिवा नः शन्तमा भव सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दिशि। इडांयै वास्त्विसि वास्तुमद्वांस्तुमन्तों भूयासम् मा वास्तोंशिछत्समह्यवास्तुः स भूयाद्यौँ उस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। प्रतिष्ठासि प्रतिष्ठावंन्तो भूयास्म मा प्रंतिष्ठायाँश्छितस्मह्मप्रतिष्ठः स भूयाद्यौं उस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आ वांत वाहि भेषजं वि वांत वाहि यद्रपंः। त्वः हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वातु आ सिन्धोरा पंरावतः॥ दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वातु यद्रपंः। यद्दो वातते गृहें ऽमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसे ततों नो धेहि भेषुजम्। ततों नो मह आवंह वात् आवांतु

भेषजम्। शम्भूर्मयोभूर्नो हृदे प्र णु आयू ५ेषि तारिषत्। इन्द्रंस्य गृहोंऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्थः। सुह यन्मे अस्ति तेनं। भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये भूर्भुवः सुवः प्रपंद्ये वायुं प्रपृद्येऽनौर्तां देवतां प्रपृद्येऽश्मानमाखणं प्रपंदो प्रजापंतेर्ब्रह्मकोशं ब्रह्म प्रपंद्य ओं प्रपंदो। अन्तरिक्षं म उर्वन्तरं बृहदुग्नयः पर्वताश्च यया वातः स्वुस्त्या स्वंस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वंस्तिमानंसानि। प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु॥

द्युभिर्क्तुभिः परिपातम्स्मानिरिष्टेभिरिश्वना सौभंगेभिः। तन्नीं मित्रो वर्रुणो मामहन्तामिदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः। कयां निश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखाँ। कया शिचेष्ठया वृता। कस्त्वां सत्यो मदानां मश्हिष्ठो मत्सदन्धंसः। दृढाचिदारुजे वसुं। अभी षु णः सखीनामिवता जीरतृणाम्। शृतं भेवास्यूतिभिः। वयंः सुपूर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो

नाधंमानाः। अपं ध्वान्तमूँणीहि पूर्धि चक्षुंर्मुमुग्ध्यंस्मान्निधयेंव बद्धान्॥ शं नों देवीर्भिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोर्भिस्रंवन्तु नः। ईशाना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषजम्। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मैं भूयासुर्यों ऽस्मान्द्वेष्ट्रि यं चं वयं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ॥ आपों जनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साग्निनां शान्ता सा में शान्ता शुच ५ शमयत्। अन्तरिक्ष १ शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्त । शुच । शमयत्। द्योः शान्ता सादित्येनं शान्ता सा में शान्ता शुच र शमयतु। पृथिवी शान्तिंरन्तरिंक्षर शान्तिर्द्योः शान्तिर्दिशः शान्तिरवान्तरदिशाः शान्तिरिग्नः शान्तिर्वायुः शान्तिरादित्यः शान्तिश्चन्द्रमाः शान्तिर्नक्षेत्राणि शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्तिर्वनस्पतंयः शान्तिर्गीः शान्तिरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिर्व्रह्म

शान्तिं ब्राह्मणः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः शान्तिं अस्त्

शान्तिः। तयाहर शान्त्या सर्वशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिंमें अस्तु शान्तिं। एह श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चैतानि मोत्तिष्ठन्तुमनूत्तिष्ठन्तु मा मा्ड् श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मा मा हांसिषुः। उदायुंषा स्वायुषोदोषंधीना रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृता । अन्। तचक्षुंर्देविहेतं पुरस्तांच्छुऋमुचरंत्। पश्येम शुरदः शतं जीवेम शरदेः शतं नन्दोम शरदेः शतं मोदोम श्रदः श्रतं भवाम श्रदः श्रतः श्रुणवाम श्ररदः श्रतं प्रब्रंवाम शरदेः शतमजीताः स्याम श्रदेः श्तं ज्योक्र सूर्यं दृशे। य उदंगान्महतोऽर्णवाद्विभ्राजंमानः सरि्रस्य मध्यात्स मां वृष्भो लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आवपनमसि धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तरिक्षं दिवं दाधार पृथिवी सदेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधिविस्रंसत्। मेधामनीषे माविंशता समीची भूतस्य भव्यस्यावंरुध्यै सर्वमायुंरयाणि सर्वमायुंरयाणि।

आभिर्गीर्भियंदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो महिं गोत्रा रुजासिं भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। ब्रह्म प्रावांदिष्म तन्नो मा हांसीत्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥४॥

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥५॥

शं नो मित्रः शं वर्रणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृह्स्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं विद्यामि। ऋतं विद्यामि। स्त्यं विद्यामि। तन्मामेवतु। तह्कारंमवतु। अवंतु माम्। अवंतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥६॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः। ७॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीयंं करवावहै। तेजस्व नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥८॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥९॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीयंं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१०॥